सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-26 अंक-10 22 मई से 5 जून 2011 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

पेट्रोल के दामों में की गई बेतहाशा बढ़ोतरी की एसयूसीआई(सी) द्वारा तीव्र निन्दा

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 15 मई को प्रैस बयान जारी कर कहा: जैसा कि हर तरफ यह चर्चा थी कि पेट्रोल-डीजल व रसोई गैस के दामों में बेतहाशा बढोतरी होने वाली है, कांग्रेस-नीत यूपीए सरकार ने तेल कम्पनियों को पेट्रोल के खुदरा मुल्य 5 रु. लीटर बढ़ाने की हरी झण्डी दिखा दी। यह बढ़ोतरी आज तक की अधिकतम है और 14 मई, 2011 की आधी रात से लागू कर दी गई है। ऑटो एलपीजी के दाम 2 रु. 19 पैसे प्रति लीटर बढाये गये हैं। यह भी डर है कि डीजल के 4 रुपये लीटर और घरेलू रसोई गैस (एलपीजी) के दाम 25 रु. से लेकर 50 रुपये से भी ज्यादा प्रति सिलेण्डर के हिसाब से बढ़ाये जाने हैं। कुछ एक महीनों में ही दामों में यह 9वीं बार बढ़ोतरी है। जब से केन्द्र सरकार ने पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्य निर्धारण पर से सरकारी नियंत्रण हटाने की किरीट पारेख कमेटी की सिफारिशों को एक साल पहले माना, तब से पेट्रोल के दाम 8वीं बार बढ़े हैं और 2004 में जब से यूपीए सरकार सत्ता में आई है पेट्रोल के दामों की यह 19वीं बार वृद्धि हुई है। यह साफ तौर पर साबित करती है कि यह सरकार कच्चे तेल के अन्तर्राष्ट्रीय दाम बढ़ने और तेल कम्पनियों को घाटा होने का झूठा बहाना बना रही है, वहीं यह हकीकत है कि कच्चे तेल के अन्तर्राष्ट्रीय दाम हाल ही के वक्त में 10% से 15% तक गिरे हैं और सरकारी मालिकाने वाली कम्पनियाँ और साथ ही साथ बड़ी-बड़ी निजी तेल कम्पनियाँ, दोनों ही इतने अकूत मुनाफे का अम्बार लगाती जा रही हैं कि विदेशों में तेल के व्यापार में भारी पूंजी निवेश करने के लायक हो गई हैं। यह कहने की जरूरत नहीं है कि पेट्रोल के दामों में इस बेतहाशा बढ़ोतरी का एक पर एक पड़ने वाला प्रभाव लोगों पर जबरदस्त आघात पहुँचायेगा जो आवश्यक चीजों की दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती कमरतोड़ महंगाई के बोझ से पहले ही दबे हुए हैं, यह पेट्रोल मूल्य वृद्धि उनके जीवन को और भी कंगाली व बदहाली की ओर धकेल देगी।

इसलिए सरकार की इस घोर निन्दनीय कार्रवाई के खिलाफ लोगों से आगे आने और पेट्रोल के दामों में की गई इस मूल्य वृद्धि को तुरन्त वापस लेने और पेट्रोल व पेट्रोलियम पदार्थों पर लगाये हुए भारी भरकम टैक्सों व सेस (अधिभार) को घटाने की माँग को लेकर जोरदार आन्दोलन गठित करने का आह्वान करते हैं।

पेट्रोल और दूध के दामों में वृद्धि का एस.यू.सी.आई.(सी) द्वारा विरोध

दिल्ली : दूध व पेट्रोल की मूल्यवृद्धि के खिलाफ 16 मई को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट), दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा संसद मार्ग पर प्रदर्शन किया। सैकड़ों प्रदर्शनकारी जन्तर-मन्तर पर एकत्रित हो कर प्रधानमंत्री कार्यालय की ओर बढ़े जिन्हें संसद मार्ग पुलिस स्टेशन पर पुलिस द्वारा रोक दिया गया जिससे प्रदर्शन जनसभा में तब्दील हो गया। सभा को पार्टी के राज्य सचिव कॉ. प्रताप सामल व अन्य ने सम्बोधित किया। महंगाई पर अपना आक्रोश प्रदर्शित करते हुए इसके लिए जिम्मेदार यूपीए सरकार का पुतला भी दहन किया गया।

वक्ताओं ने कहा कि ईंधन के दामों में बढ़ोतरी के कारण अन्य वस्तुएं भी महंगी हो जाएंगी। गरीब लोगों, बच्चों, बूढ़ों और बीमारों के लिए आवश्यक प्रोटीन के सबसे सस्ते स्रोत दूध के दामों में यह वृद्धि एक ऐसे समय में हुई है जब आम जनता खाद्य पदार्थों, चीनी, दूध, और सब्जियों जैसी आवश्यक वस्तुओं की कमरतोड़ महंगाई के असहनीय बोझ तले पहले ही दबी हुई है। सभा के अंत में पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल द्वारा इन सब समस्याओं से सम्बन्धित एक ज्ञापन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को सौंपा गया।

पेट्रोल के दामों में वृद्धि का एस.यू.सी.आई.(सी) द्वारा देशभर में विरोध

भट्टा पारसौल में कृषि भूमि के जबरन अधिग्रहण के खिलाफ एसयूसीआई (सी) ने संघर्षरत किसानों पर पुलिस दमन का विरोध किया

सोशलिस्ट यूनिटी सैन्टर आफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉ. प्रभाष घोष ने उत्तर प्रदेश के भट्टा-पारसौल में कृषि भूमि के जबरन अधिग्रहण के खिलाफ संघर्षरत किसानों पर हुए पुलिस दमन का विरोध करते हुए 9 मई को एक प्रैस बयान में कहा:

भट्टा-पारसौल गावों के किसान कई वर्षों से अपनी कृषि भूमि के जबरन अधिग्रहण का विरोध कर रहे हैं। उनकी जमीन का अधिग्रहण यमुना एक्स्प्रैक्स वे तथा ग्रेटर नोएडा मास्टर प्लान के तहत किया जा रहा है। इसमें किसानों, खेत मजदूरों व आम लोगो का हित कहीं नहीं है। यह परियोजना किसानों की जमीन को कोड़ियों के भाव खरीद कर बड़े-बड़े भूमाफिया व बिल्डरों के हित साधने के लिए तैयार की गई है। किसान इसका विरोध कर रहे हैं। वे पिछले लगभग चार महीनों से धरना दे रहे थे। मगर प्रदेश की बसपा सरकार ने किसानों की समस्याओं को हल करने का कोई ठोस प्रयास नहीं किया। सरकार के निराशाजनक व नकारात्मक रवैये और प्रशासन के आन्दोलन तोड़क षड्यंत्र से ऐसा रक्तरंजित दिन आया है। सरकार व प्रशासन के बर्बरता पूर्ण हमले ने तीन किसानों की जान ले ली। अनेक को घायल कर दिया। पुलिस की बर्बरता ने तब तमाम हदें पार कर दी जब उसने किसानों व खेतमजदूरों के दर्जनों घरों को आग लगा दी। खेती के वाहनों को जला डाला। घरो में घुस कर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया और बुढ़ों व बच्चों को भी बेरहमी से पिटा। गाँवों के अनेक लोग लापता हैं। लोगों को पक्का यकीन है कि इनमें से उनको मारकर उपलों के ढेर में जला डाला गया है। अत: हैरत की बात नही होगी जब मृतकों की संख्या और भी बढ़ जायेगी।

प्रदेश की बसपा सरकार व पुलिस के इस बर्बरता पूर्ण कृत्य का हम कड़ा प्रतिवाद करते हैं। इसकी जितने कड़े शब्दों में निंदा की जाए कम है। देश के दूसरे-दूसरे

(शेष पृष्ठ 8 पर)

पटना में पार्टी स्थापना दिवस पर सभा में कॉमरेड रंजीत धर का भाषण

24 अप्रैल हमारी पार्टी का स्थापना दिवस है। हमारी पार्टी की बिहार राज्य कमिटी स्थापना दिवस मना रही है। इसी के तहत आज की यह सभा आयोजित है। आज देश की स्थिति क्या है? आज जनता किस हालत में रह रही है? दिन पर दिन समस्याएँ विकराल होती जा रही हैं। ये सारी बातें आप जानते हैं। इस पर तो मैं चर्चा करूँगा ही, लेकिन इसके साथ मैं एक दूसरी बात आपसे कहना चाहूँगा। हमारे देश में बहुत सारी पार्टियों के रहते हुए भी, मार्क्सवाद-लेनिनवाद का नाम लेकर चलने वाली ढेर सारी पार्टियों के रहते हुए भी एसयूसीआई की स्थापना क्यों की गयी? इसकी वजह क्या है? इस विषय को जानना, इस पर चर्चा करना आज काफी आवश्यक है।

हमारे देश में मुख्य रूप से दो वर्ग हैं। यह सभी जानते हैं। एक तरफ मुट्ठीभर अमीर लोग हैं, जो सत्ता में बैठकर देश की जनता का शोषण कर रहे हैं। दूसरी तरफ आम जनता है, करोड़ों लोग हैं, गरीब, मध्यमवर्गीय-निम्न मध्यमवर्गीय जनता है, जो शोषित-पीड़ित है। हमारा देश दो वर्गों में बँटा हुआ है। इससे कोई इनकार नहीं कर सकता। यह वास्तविकता है। इसे सभी जानते हैं। देश एक नहीं है। देश में एक ओर मुट्ठीभर पूँजीपति, अमीर लोग हैं, तो दूसरी ओर करोड़ों गरीब जनता है। पूँजीपति वर्ग सत्ता में बैठकर देश का शोषण कर रहा है, मुनाफा लूट रहा है। यह काम वह किसके सहारे कर रहा है? उसे कहाँ से मदद मिल रही है? यह सब हो रहा है राजसत्ता के जरिये।

पार्टी क्या है? पार्टी वर्ग के हाथों में अपना लक्ष्य पूरा करने का औजार (instrument) है। इसके जरिए वर्ग अपना लक्ष्य हासिल करता है। पूँजीपति वर्ग शोषण के जरिये सत्ता को चला रहा है मुनाफा कमाने के लिए। इसके पीछे उसकी पार्टी है। पार्टी की मदद से ही वह अपने हित में सत्ता का संचालन कर रहा है। हमारे देश में पूँजीपतियों की कई पार्टियाँ हैं। हम अपने तजुर्बे से जानते हैं, आम जनता जानती है कि कांग्रेस हो या भाजपा या क्षेत्रीय पार्टियाँ हों। अभी नीतीश कुमार की सरकार बिहार में है। पहले लालू प्रसाद की सरकार थी या उत्तर प्रदेश में मुलायम सिंह की सरकार थी। जदयू हो, राजद हो या फिर सपा हो–ऐसी क्षेत्रीय पार्टियाँ जो अपने-अपने राज्यों में सरकार चलाती हैं। अन्य क्षेत्रीय पार्टियों में आंध्र प्रदेश में टीडीपी हो या फिर असम में असम गण परिषद। पश्चिम बंगाल में वामपंथ के नाम पर काफी दिनों से सीपीआई(एम) की सरकार हो। ये सभी पूँजीपतियों की पार्टियाँ हैं। चाहे वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद की बात करें या फिर दूसरी बात करें। वे क्या नारा लगाती हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं है। वास्तव में उनका काम क्या है? वे क्या कर रही हैं, किसका स्वार्थ देख रही हैं, किसका स्वार्थ पूरा कर रही हैं। यही देखना चाहिए। पार्टी जो भी बात क्यों न करे, देखना यह चाहिए कि पार्टी किसकी पार्टी है। गरीबों और अमीरों में बँटे देश में पार्टी गरीबों की है या अमीरों की। ऐसी कोई पार्टी नहीं हो सकती, जो अमीरों और गरीबों दोनों का हित देखे–यह धोखा है। या तो वह अमीरों की पार्टी होगी या फिर वह गरीबों की पार्टी होगी। सभी का हित देखने की जो बात करते हैं, वास्तव में वे धोखेबाज हैं। सभी का हित देखने की बात कर वे दरअसल अमीरों का हित देखते हैं। हम देख रहे हैं कि आजादी के बाद यही हो रहा है। देश का शोषित वर्ग, गरीब दुखी जनता, मध्यमवर्गीय लोग, जो शोषण से पीड़ित हैं, उनका जीवन अंधेरे में कैद है। बगैर पार्टी के उन्हें मुक्ति नहीं मिल सकती। पार्टी ही मुक्ति ला सकती है, उन्हें सही दिशा दे सकती है। गरीब, मध्यमवर्गीय लोगों–देश की शोषित-पीड़ित जनता को समझना होगा कि उनका हित देखने वाली पार्टी कौन है? जो पार्टियाँ कहती हैं कि हम सभी की भलाई करेंगे, सभी का हित देखेंगे। ऐसे में विचार कर देखना चाहिए कि वह पार्टी किस वर्ग की पार्टी है। हमारी पार्टी कौन है, इसे हमें पहचानना होगा।

आजादी आंदोलन के दौरान ही देश अमीरों और गरीबों में बँटा हुआ था। ऐसा नहीं कि देश आज अमीरों और गरीबों में बँट गया। अंग्रेज हमारे देश पर कब्जा जमाकर यहाँ शोषण करते थे। अंग्रेज कैसे शोषण करते थे, किसके माध्यम से शोषण करते थे? अंग्रेजों ने हमारे देश में अपना शासन कैसे लागू किया? उनके हाथ में कौन-सा औजार था, जिसके जरिये वे शोषण किया करते थे। बाहर से आकर उन्होंने हमारे देश की सत्ता पर कब्जा जमा लिया और यहाँ की जनता का शोषण करने लगे। ऐसा उन्होंने किया राजसत्ता के जरिये। पुलिस, फौज, न्यायपालिका को मिलाकर उन्होंने एक ढाँचा तैयार किया था। ऐसा उन्होंने कैसे किया? उन्होंने पुलिस को ताकतवर बनाया, फौज को ताकतवर बनाया। उन्होंने अपनी सहूलियत के लिए न्यायपालिका का निर्माण किया। इसके लिए कोर्ट, हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट आदि बनाया गया।

जो लोग शोषण से मुक्ति चाहते हैं, अगर वे देश को न जान सकें कि देश कैसे चलता है, देश को कौन चलाता है, देश में शोषण कैसे होता है, देश में करोड़ों गरीब लोग मुट्ठीभर पूँजीपतियों को क्यों हटा नहीं पा रहे हैं, तो उन्हें शोषण से मुक्ति कैसे मिल पाएगी? जबकि वे तो मुक्ति चाहते हैं। हमारे देश की करोड़ों जनता, जो भूखों मर रही है, जिसके आदमी की तरह जीने की कोई गुंजाइश नहीं है, वह शोषण से मुक्ति चाहती है। लेकिन शोषण से मुक्ति कैसे मिलेगी? इसमें बाधक कौन है? अंग्रेजों ने हमारे देश पर कब्जा किया था, हमें उनके खिलाफ लड़ना पड़ा। उनके खिलाफ लम्बे दिनों तक संघर्ष करना पड़ा। संघर्ष से ही आजादी मिली। उन लोगों ने जिस राजसत्ता की स्थापना की थी, वह राजसत्ता क्या है? ठीक से समझ लीजिए कि राजसत्ता क्या है? शोषण कैसे होता है? पुलिस, फौज, न्यायपालिका और अफसरशाही को लेकर राजसत्ता है। शोषण की जो व्यवस्था हमारे देश में लागू हुई, राजसत्ता ही उनका संचालन करती है। इसी औजार के जरिये शोषण होता है। अगर आप इसकी खिलाफत करेंगे, तो आप पर मुकदमा चलेगा, इसके आधार पर फैसला होगा और अगर आप कसूरवार साबित होंगे, तो आपको पुलिस हिरासत में बंद कर दिया जायेगा। आपको दबा दिया जायेगा। यहाँ गरीब लोग अपने जीवन के सवालों को लेकर कोई भी आंदोलन क्यों न करें, उसे दबा दिया जाता है। उसे क्यों दबा दिया जाता है? इसे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि जिस देश में हम रह रहे हैं, वह कैसे चल रहा है।

हमारी जो कमी है, वह है हमारी अज्ञानता। देश के आम आदमी को नहीं मालूम कि देश में शोषण कैसे होता है, किसके जरिये होता है। अगर हम इससे मुक्ति चाहते हैं, तो वह कैसे संभव है? हमें किसके खिलाफ लड़ना है? इसमें बाधक कौन है? देखिए, एस्बेस्टस फैक्ट्री निर्माण के खिलाफ किसानों ने आंदोलन किया था। उनके आंदोलन पर किसने गोली चलाई? आंदोलन पर किसने दमन चलाया? अगर वहाँ की तमाम जनता एकजुट होकर इसका विरोध नहीं करती, तो क्या वह विजयी हो पाती? उनके पास राजसत्ता की ताकत है। उनके पास पुलिस है। मालिक के साथ पुलिस है। एस्बेस्टस उद्योग का मालिक एक है। उसके खिलाफ हजारों किसान हैं, जो चाहते हैं कि उनकी जमीन नहीं ली जाय, उनकी उपजाऊ जमीन पर उद्योग नहीं लगे। जमीन तो किसानों की है। मालिक के पक्ष में पुलिस की ताकत है, राजसत्ता की ताकत है। अगर आप आंदोलन करेंगे, तो आप पर लाठियाँ चलायी जायेंगी। आंदोलन को दबा दिया जायेगा। आपके पास ताकत कहाँ है? उनके साथ राजसत्ता की ताकत है, पुलिस की ताकत है, न्यायपालिका की ताकत है।

हमारे देश में क्या हुआ? अंग्रेजों ने इसी पुलिस, इसी फौज, इसी न्यायपालिका को स्थापित किया। आजादी की लड़ाई के बाद अंग्रेज यहाँ से चले गये। उनके चले जाने के बाद, जिस राजसत्ता के जरिये वे शोषण करते थे, उसको वे किसे सौंप कर गये? वे सौंप कर गये कांग्रेस को। कांग्रेस क्या है? कांग्रेस पूँजीपतियों की पार्टी है।

आजादी आंदोलन के दौरान ही हमारा देश दो हिस्सों में बँटा हुआ था। आजादी आंदोलन में करोड़ों गरीब लोगों ने भाग लिया। दूसरी तरफ मुट्ठीभर पूँजीपति भी आंदोलन में मदद करना चाहते थे। वे मैदान में नहीं उतरे। उन लोगों ने गोलियों का सामना नहीं किया। हमारे देश के टाटा-बिड़ला ने आजादी आंदोलन में अंग्रेजों की गोलियों का सामना नहीं किया। अंग्रेजों की गोलियों का सामना किसने किया? सामना किया भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद ने, गरीब मध्यमवर्गीय जनता ने। गरीब मध्यमवर्गीय जनता ने अंग्रेजों की हुकूमत के खिलाफ मैदान में उतरकर संघर्ष किया। वे हर तरह के शोषण-अत्याचार से मुक्ति चाहते थे। वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे, जिस समाज में हर व्यक्ति इंसानियत के साथ जीवित रह सके। लेकिन हमारे देश

के मालिक चाहते थे कि अंग्रेज चले जायें और शोषण का औजार राजसत्ता उनके हाथ में आ जाय और वे देश की जनता को लूट सकें। अंततः मुट्ठीभर पूँजीपतियों की इच्छा ही पूरी हुई। देश की करोड़ों जनता, जो हर तरह के शोषण से मुक्ति चाहती थी, उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। अंग्रेज चले गये, पर शोषण रह गया, राजसत्ता रह गयी। पूँजीपतियों का शोषण आ गया। इसका कारण क्या है? इसका कारण है पूँजीपतियों के लक्ष्य की पूर्ति के लिए उनकी पार्टी मौजूद थी। जिन लोगों ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया, अपनी कुर्बानी दी, उनकी अपनी पार्टी नहीं थी। पार्टी का कितना महत्व है। बिना पार्टी के मुक्ति संभव नहीं है। आज आजादी के बाद मालिक वर्ग किसके बल पर जनता को लूट रहा है? वह लूट रहा है अपनी पार्टी के बल पर। चाहे सत्ता में कांग्रेस हो या भाजपा हो या क्षेत्रीय पार्टी राजद हो या लोजपा या नीतीश कुमार की जदयू–सभी पूँजीपतियों की पार्टियाँ हैं। देश की मौलिक स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कांग्रेस जब सत्ता में रही, तब गरीबों की हालत में क्या कोई सुधार हुआ, कोई परिवर्तन हुआ? फिर राजद की सरकार आयी। उसके बाद नीतीश कुमार की सरकार आयी। जनता के जीवन में कोई बदलाव नहीं आया। 1977 में केन्द्रीय सरकार में कांग्रेस आयी। उसके बाद भाजपा आयी। फिर कांग्रेस आयी। उसके बाद फिर भाजपा आयी। कांग्रेस का शासन चल रहा है। क्या कोई तर्फका आया? कोई परिवर्तन आया? कांग्रेस के जमाने में जो स्थिति थी, भाजपा के जमाने में भी वही स्थिति रही। लालू के जमाने में जो स्थिति थी, नीतीश के जमाने में भी वही चल रहा है। परिवर्तन क्या है? क्या महंगाई कुछ घटी? क्या किसानों की फसल का उचित मूल्य मिल रहा है? क्या खाद-बीज सस्ते दर पर मिल रहा है? क्या चावल-गेहूँ सस्ते दर पर मिल रहा है? क्या रोजगार मिल रहा है? अगर रोजगार मिल रहा है, तो परिवार के भरण-पोषण के लिए जितनी तनख्वाह की जरूरत है, क्या उतनी मिल रही है? तो परिवर्तन कहाँ हुआ? सरकारों का परिवर्तन हो रहा है। लेकिन लोगों के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हो रहा है। कारण क्या है? पार्टी को पहचानना होगा। हमारी पार्टी कौन सी है? यदि आप अपनी पार्टी का सही चुनाव नहीं कर सकें, यदि आप अपनी पार्टी को ताकतवर न बना सकें ताकि वह अपनी ताकत बटोरकर एक दिन राजसत्ता पर कब्जा कर सके, पूँजीपतियों के शासन का खात्मा कर करोड़ों गरीब, मध्यमवर्गीय जनता का शासन कायम किया जा सके। यदि आपकी पार्टी नहीं होगी, तो यह काम कैसे होगा? कौन आपको नेतृत्व देगा? कौन आपको सही दिशा दिखाएगा? हमारे देश में काफी लड़ाइयाँ हुई हैं। लेकिन इतनी लड़ाइयों के बाद भी ऐसी स्थिति क्यों है? क्योंकि उन लड़ाइयों में हमारी पार्टी का नेतृत्व नहीं था। अगर मजदूर वर्ग की सही पार्टी लड़ाई और संघर्ष के नेतृत्व में न रहे, तो लड़ाई रास्ते से भटक जायेगी। ऐसा ही हमारे देश में हुआ है। बहुत बार गोलियाँ चलीं, काफी जुल्म हुए। काफी लोग मारे गये। काफी लोगों ने लाठी-गोली का सामना किया। काफी परिवार आंदोलन में तबाह हो गये। फिर भी हम एक इंच आगे नहीं बढ़ सके। क्योंकि हमारी पार्टी नहीं थी। इसलिए पार्टी का काफी महत्व है। Party is the instrument at the hands of the class.

(शेष पृष्ठ 6 पर)

मई दिवस पर देश भर में मजदूर सभाएँ

कलकत्ता : ऑल इण्डिया यूनाइटेड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) के तत्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर एकजुटता दिवस पहली मई को कोलकाता के मोलाली युवा केन्द्र में हुई एक सभा में मजदूरों, कर्मचारियों और हर तबके के मेहनतकश लोगों ने शिरकत की। इस सुबह देश के हर राज्य में एआईयूटीयूसी के सभी कार्यालयों और एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध सभी यूनियनों के द्वारा कारखानों के गेटों पर शहीदों की याद में लाल झण्डा फहराया गया। कोलकाता में केन्द्रीय कार्यालय के सामने संगठन की कार्यकारिणी के सदस्य कॉमरेड दीपक देव ने झण्डा फहराया। वहाँ स्थापित की गई शहीद वेदी पर राज्य उपाध्यक्ष कॉमरेड अब्दुस सयैद ने माल्यार्पण किया। कारखानों के गेटों पर मजदूरों ने मई दिवस के बैज धारण किये। युवा केन्द्र पर उस दिन हुई सभा में मौजूद मजदूरों का उत्साह देखने लायक था। वे हाल से सटे हुए चबूतरे पर संगठन की पत्र-पत्रिकाओं को लेकर लगाये गये बुक स्टाल के पास खड़े होकर संगठन के सर्वभारतीय अध्यक्ष और महासचिव का भाषण सुनने के लिए इंतजार कर रहे थे। कामकाजी महिलाएं भी आई हुई थीं।

सर्वहारा के महान् नेता, एसयूसीआई (सी) पार्टी के संस्थापक महासचिव, एआईयूटीयूसी के संस्थापक कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गान से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगठन के वरिष्ठ सदस्य पश्चिम बंगाल राज्य उपाध्यक्ष कॉमरेड अब्दुस सयैद ने की। इसके अलावा मंच पर उपस्थित थे एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष, पार्टी के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड माणिक मुखर्जी व कॉमरेड रणजीत धर और एआईयूटीयूसी के महासचिव व एसयूसीआई (सी) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड शंकर साहा। मुख्य वक्ता थे एआईयूटीसीयूसी के सर्वभारतीय अध्यक्ष कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती।

सबसे पहले कॉमरेड शंकर साहा ने वक्तव्य रखा। उन्होंने कहा कि 1889 में महान् एंगेल्स के नेतृत्व में स्थापित दूसरे इन्टरनेशनल में पारित एक प्रस्ताव के अनुसार 1890 से सारी दुनिया में मजदूर एकजुटता दिवस के रूप में मई दिवस मनाया जाता है। मई दिवस ने वर्ग-संघर्ष का आह्वान किया है।

मई दिवस मनाने के जरिए वर्ग-संघर्ष के रास्ते एक दिन 1917 में रूस की क्रांति हुई थी। लेकिन संशोधनवाद और प्रतिक्रियावादियों के विश्वासघात के कारण मजदूर आन्दोलन के इस गौरवमय अध्याय को बरकरार रखना सम्भव नहीं हुआ। स्टालिन की मृत्यु के बाद आये नेतृत्व द्वारा संशोधनवाद पर अमल किये जाने से रूस में प्रतिक्रांति हो गई। इसी घटना की पुनरावर्ती चीन में हुई। माओ त्से-तुंग के निधन के बाद बाजार अर्थव्यवस्था कायम करने के जरिए चीन भी प्रतिक्रांति के रास्ते पर चल पड़ा। सोवियत यूनियन के पतन के साथ ही विश्व साम्यवादी खेमा भी ढह गया। इसके नतीजतन मजदूर आन्दोलन को काफी नुकसान पहुँचा है, वह कमजोर हो गया है। लेकिन आशा की बात है कि वर्तमान में दुनिया भर में सोशल डेमोक्रेसी के खिलाफ आवाज उठ रही है और इसके खिलाफ मजदूर आन्दोलन गठित हो रहा है। हाल ही में ग्रीस में डब्ल्यूएफटीयू (वर्ल्ड फैडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन्स) के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 104 देशों से मजदूर प्रतिनिधि आये थे। वे सब सोशल डेमोक्रेसी के खिलाफ बोले, इसलिए हमें उम्मीद बंधी है। सिर्फ यूरोप या चीन, रूस में ही नहीं बल्कि हमारे देश में भी मजदूर आन्दोलन के सामने मुख्य खतरा सोशल डेमोक्रेसी है। जब तक मजदूर वर्ग का आन्दोलन केवल मात्र आर्थिक माँगें हासिल करने के दायरे तक ही महदूद रहेगा, तब तक मजदूर आन्दोलन सही लक्ष्य अर्थात् मजदूरों की मुक्ति के लक्ष्य पर नहीं पहुँच पायेगा। कॉमरेड शंकर साहा ने कॉमरेड शिवदास घोष की शिक्षाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि 'हम गुलाम हैं, हमें दो रोटी ज्यादा दो' यह माँग लेकर मजदूर आन्दोलन ज्यादा दूर तक आगे नहीं बढ़ सकेगा। मजदूर आन्दोलन को पूंजीवादी राजसत्ता के खिलाफ अर्थात् फौज, पुलिस-प्रशासन अफसरशाही और न्यायपालिका को लेकर गठित राजसत्ता और पूंजीवादी व्यवस्था के खिलाफ लड़ना होगा। कॉमरेड शिवदास घोष ने बार-बार हमें यह बात कही थी लेकिन हम उपयुक्त ढंग से खुद को उस तरह ढाल नहीं पाये हैं। कॉमरेड साहा ने क्षोभ के साथ कहा कि कोई-कोई यह टिप्पणी कर रहा है कि जो सरकार में जाते हैं मजदूर उनकी तरफ ही चले जाते हैं। दु:ख की बात होते हुए भी यह बात काफी हद तक सच है। गलत राजनीति से पथभ्रष्ट हुए मजदूर आन्दोलन में यह सुविधावाद लम्बे अर्से से चला आ रहा है। इस राज्य में 34 साल से जो सत्ता में हैं उनकी धारणा भी इसी तरह की है, इससे कुछ अलग नहीं।

मुख्य वक्ता एआईयूटीसीयूसी के अध्यक्ष कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि यह साल मई दिवस का 125वाँ साल है। अमेरिका की औद्योगिक नगरी शिकागो में आठ घण्टे के कार्य दिवस की माँग पर जो आन्दोलन चला था, उसकी धारावाहिकता में ही 1886 की 1 मई को पाँच लाख मजदूरों का एक विशाल जुलूस शिकागो शहर के राजपथ पर निकला था। उस समय सूर्योदय से सूर्यास्त तक 12 घण्टे काम करना पड़ता था। कभी-कभी यह समय सीमा 16 व 18 घण्टे भी हो जाती थी। मजदूरों को अस्वास्थ्यकर माहौल में, कड़ी मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती थी। काम से बाहर विश्राम या सामाजिक जीवन कहने को दरअसल कुछ नहीं था। इसके खिलाफ मेहनतकश लोगों में जबरदस्त रोष-आक्रोश जमा होता जा रहा था। उसी समय मजदूर आन्दोलन की और भी बहुत सारी माँगों में से यह 8 घण्टे काम की माँग प्रमुख हो गई थी। मजदूरों की माँग और आन्दोलन में शोषण से मुक्ति और उनकी मुक्ति का सवाल भी निहित था। मजदूर आन्दोलन का यह व्यापक और जुझारू रूप देखकर अमेरिकी शासक वर्ग भयभीत हो गया था। इसी सिलसिले में 3 मई को मैक कार्मिक कारखाने के हड़ताली मजदूरों पर पुलिस ने बर्बर हमला किया। पुलिस की गोलाबारी में 6 मजदूर मारे गये। इस हत्याकाण्ड के प्रतिवाद में 4 मई को शिकागो के हे मार्केट स्क्वायर पर शाम को एक विरोध सभा करने का आह्वान किया गया। झुण्ड के झुण्ड में मजदूर उस सभा में शामिल हुए। पूरी तरह शांतिपूर्ण सभा हो रही थी। अचानक भड़काने के लिए सभास्थल पर एक बम फेंका गया। उसके बाद इस बहाने से पुलिस का अंधाधुंध ताण्डव शुरू हो गया। पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ चलायी जिसके नतीजतन कई मजदूर मारे गये। पुलिस की गोलीबारी से कुछ पुलिसवाले भी मारे गये। उसके बहाने पुलिस ने मजदूर आन्दोलन के नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। अमेरिकी पूंजीपति वर्ग की घिनौनी साजिश और कुचक्र के शिकार मजदूर आन्दोलन के इन नेताओं में से चार की मुकदमे के नाटक के बाद फाँसी देकर हत्या कर दी गई। ये थे पारसन्स, स्पाइश, फिशर और एंगेल। नेता सत्य के लिए, न्याय के लिए जान तक दे सकते हैं, इन्सानियत का मोल चुका देना जानते हैं– इस चेतना और शौर्यवीर्यता का एक चरम रूप इन नेताओं के माध्यम से खिलकर सामने आया था – इनके द्वारा संचालित मजदूर आन्दोलन भी उसी तरह जुझारू धारा में चल रहा है। कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि 'जब तक मजदूर आन्दोलन चलेगा, मेहनतकश लोग मई दिवस आन्दोलन से प्रेरणा लेते रहेंगे। इस कुर्बानी, बहादूरी, साहस, आत्मत्याग से हमें भी प्रेरणा लेनी होगी।

उन्होंने कहा कि आज मई दिवस मनाते हुए अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में देश की परिस्थिति पर विचार करना जरूरी है। वर्तमान में पूंजीवादी शोषण-जुल्म, बेरोजगारी, छंटनी, महंगाई से मजदूरों की पीठ दीवार से लग चुकी है। इसलिए बचने के लिए देश-देश में फिर मजदूर आन्दोलन का तूफान उठ रहा है। ग्रीस, पुर्तगाल, फ्रांस सभी जगह मेहनतकश लोग आन्दोलन में आगे आ रहे हैं। यहाँ तक कि तुलनात्मक रूप से पिछड़े हुए अरब दुनिया के देशों में भी आन्दोलन की लहर उठ खड़ी हुई है, ट्यूनिशिया, मिस्र, यमन में आन्दोलन चल रहा है। ऊपरी तौर पर देखने में भिन्न-भिन्न कारण होने पर भी सभी आन्दोलनों के क्षेत्र में मूल कारण एक ही है, वह है पूंजीवादी शोषण-शासन, अत्याचार। लेनिन ने अपने समय में ही कहा था कि साम्राज्यवादी युग में पूंजीवाद अपने विकास की अन्तिम अवस्था में पहुँच गया है। लेनिन ने कहा था कि साम्राज्यवाद, पूंजीवाद की चरम अवस्था है। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब है कि विकास के अन्तिम चरण में पहुँच कर आज मरणासन्न हो चुका पूंजीवाद मानव सभ्यता को और कुछ नहीं दे सकता, लेकिन छीन सब कुछ सकता है।

मार्क्सवाद की अनिवार्य आवश्यकता के प्रसंग में कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा कि रूस में क्रांति कर लेनिन ने दिखाया था कि मार्क्सवाद ही आज मुक्ति का हथियार है। मार्क्स-एंगेल्स ने भी कम्युनिज्म के ज्ञान भण्डार को तैयार करते-करते ही मजदूर आन्दोलन गठित करने में खुद को झोंक दिया था। पहला और दूसरा इन्टरनेशनल गठित करने का काम उन्होंने किया था – दूसरे इन्टरनेशनल से ही यह आठ घण्टे के कार्य दिवस की माँग सारी दुनिया में मान ली गई। लेकिन यही अखिरी बात नहीं थी। लेनिन ने दिखाया था कि आन्दोलन के दबाव से मालिक अगर मजदूरों की सब की सब आर्थिक माँगें मान ले, तो भी मालिक-मालिक ही रह जाता है। विभिन्न देशों के वर्तमान आन्दोलन के प्रसंग में उन्होंने कहा कि लेकिन ये आन्दोलन समाज के आमूलचूल परिर्वतन के रास्ते पर नहीं गये। कुछ माँगें हासिल होने तक ही ये आन्दोलन सीमित रह गये। मार्क्सवाद की शिक्षा है कि मजदूर आन्दोलन को सही मंजिल पर पहुँचाने के लिए सही क्रांतिकारी सिद्धांत और क्रांतिकारी पार्टी होनी चाहिए।

समाज के क्रांतिकारी परिर्वतन के क्षेत्र में कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने कहा कि इतिहास की जबरदस्त शक्ति है मनुष्य की चेतना और संगठन की शक्ति। उन्होंने कहा कि इतिहास में सबसे आधुनिक और सब से प्रगतिशील चिन्तन मजदूर वर्ग लाया है। सामन्ती समाज की धार्मिक संकीर्णता खत्म कर निजी मालिकाना आधारित पूंजीवाद लाया था व्यक्तिवाद। उसके विपरीत, मजदूर का अस्तित्व है सामूहिक। मजदूर का राज होगा सामूहिक मालिकाने के आधार पर कायम राज। सामूहिक तौर पर मजदूर माल उत्पादन करता है। जिसका उपभोक्ता समाज है। मजदूर

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कलकत्ता में सभा को संबोधित करते हुए कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती

मई दिवस पर देश भर में...

को किये हुए काम की मजदूरी मिलती है। मजदूर का अस्तित्व सामूहिक है इसलिए उसकी विचारधारा भी सामूहिक है। बुर्जुआ या पूंजीवादी समाज के माहौल मे मजदूर हमेशा यह बात जान नहीं पाता है, लेकिन जिस दिन वह अपनी सामूहिक, सामाजिक सत्ता के बारे में सचेत हो जायेगा, उसी दिन वह क्रांतिकारी मजदूर होगा। इसलिए मार्क्स की शिक्षा है कि क्रांति के लिए पहले खुद को बदलना होगा; वह होगा वर्ग सचेत मजदूर। मार्क्स ने एक समय कहा था कि उनकी विचारधारा केवल व्यक्तिगत सम्पति रहित मानवतावाद ही है (ह्युमेनिज्म माइनस प्राइवेट प्रोपर्टी)। असल में निजी सम्पत्ति को छोड़ दिया जाये तो फिर वह बुर्जुआ मानवतावाद नहीं रहता है। आमूलचूल बदल जाता है। उन्होंने कहा कि हमारे इस 120 करोड़ लोगों के देश में कॉमरेड शिवदास घोष के द्वारा तैयार की गई सही क्रांतिकारी पार्टी भी है, सही क्रांतिकारी सिद्धांत भी है, फिर भी क्रांति क्यों नही हो रही है–इसकी वजह यह कि क्रांतिकारी पार्टी पर्याप्त शक्ति लेकर आज भी गठित नहीं हो पायी है। यूरोप में कई सुसंगठित आन्दोलन होने पर भी क्रांति नहीं हुई, क्योंकि वहाँ क्रांतिकारी पार्टी नहीं थी। क्रांति के पहले वाले मुहूर्त में फासीवाद आ गया था। आज भी यूरोप में मजदूर आन्दोलन के नेतृत्व में सोशल डेमोक्रेसी आ गई है। क्रांतिकारी नेतृत्व की कमी अरब दुनिया में भी खल रही है। इसलिए क्रांतिकारी पार्टी को मजबूत करना होगा।

कॉमरेड चक्रवर्ती ने कहा कि बाहर से देखने से लगता है कि पूंजीवादी मजबूत हुआ है। क्योंकि उसकी विरोधी शक्ति अभी भी कमजोर है, असल में पूंजीवाद लगातार कमजोर होता जा रहा है। तीन साल पहले पूंजीवाद की मंदी ने विश्व पूंजीवाद की नींव हिला दी थी। हमारे देश में भी संकट चरम पर था। क्रांति की वास्तव में जमीन तैयार है, लेकिन इसके बावजूद अगर क्रांतिकारी पार्टी उपयुक्त ढंग से तैयार न हो, तो क्रांति नहीं होगी। उन्होंने कहा कि पूंजीवाद ने अपने संकट का सारा बोझ मजदूर वर्ग पर थोप दिया है। सारी दुनिया के विभिन्न आन्दोलनों की तरह हमारे देश में भी मजदूर आन्दोलन के नेतृत्व में सोशल डेमोक्रेटिक (सामाजिक जनवादी) शक्तियाँ हैं। इसी परिस्थिति में कॉमरेड घोष ने मजदूर आन्दोलन में जुझारू धारा को बचाये रखने की कोशिश की थी – हमारा संगठन आज भारत में इक्कीस राज्यों में फैल गया है। हम आज उतने छोटे नहीं हैं। लेकिन फिर भी क्रांति करने के लिए आज भी हमारी यह शक्ति काफी नहीं है।

कॉमरेड चक्रवती ने कहा कि मजदूरों को खुद को बदलने के लिए व्यक्तिवाद के खिलाफ लड़ना होगा। मार्क्सवाद ने दिखाया है कि शोषण, अत्याचार, संकट की जड़ है निजी मालिकाना जो दास युग से शुरू हुआ था। निजी मालिकाने का खात्मा समाजवाद में होगा। उसी दिन मिलेगी मुक्ति। व्यक्तिवाद और व्यक्तिगत सम्पत्ति आधारित मानसिक ढाँचे(प्राइवेट प्रापर्टी मेन्टल कॉम्पलेक्स)को, जो चरम रूप में समाज की समस्त नीति-नैतिकता, मनुष्यत्व, विवेक पर भयंकर हमला कर रहा है, उसको नेस्तानाबूद किये बिना मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाना नामुमकिन है। यहाँ जो लोग सोशल डेमोक्रेसी पर अमल कर रहे हैं वे कहते हैं कि उनकी लड़ाई बड़ी पूंजी के खिलाफ है। जबकि कार्य क्षेत्र में सिंगूर में भारत की अन्यतम बड़ी एकाधिकारी पूंजी के हाथों में वे किसानों की जमीन जबरन छीन कर दे रहे थे। नंदीग्राम की जमीन उन्होंने इन्डोनेशिया के कार्पोरेट घराने सलीम समूह को देने की व्यवस्था की थी। पूंजीवाद आज जो कुछ सुन्दर है, जो कुछ अच्छा है उसे ही खत्म कर रहा है। आन्दोलन की गति और विकास की धारा को आगे बढ़ाने के लिए जरूरी मार्क्सवाद-लेनिनवाद के ज्ञान भण्डार में एक उन्नत समझ कॉमरेड शिवदास घोष हमारे लिए छोड़ गये हैं। जब नितान्त हीन व्यक्तिवाद के प्रभाव से आप अपने को मुक्त कर पायेंगे, तभी सही मंजिल पर मजदूर आन्दोलन को ले जा पायेंगे। जो शिक्षा कॉमरेड शिवदास घोष हमारे सामने रख गये हैं उस शिक्षा को अपनाने पर ही हम आगे बढ़ पायेंगे। यही बात कहकर मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ। सभा में हिन्दी भाषी मजदूरों की उपस्थिति को ध्यान में रखकर विशेष अनुरोध पर कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने अति संक्षेप में हिन्दी में अपने भाषण का सारांश रखा। अन्तर्राष्ट्रीय गान के साथ सभा का समापन हुआ।

बहादुरगढ़ (हरियाणा): मजदूर कल्याण मंच ने यहाँ मई दिवस के अवसर पर एम.आई.ई. बहादुरगढ़ में कॉ. कपिल प्रसाद की अध्यक्षता में सभा की जिसमें

सैकड़ों मजदूरों व कर्मचारियों ने भाग लिया। मंच संचालन कॉ. सतीश ने किया। शहीद यादगार कमेटी के अध्यक्ष मास्टर हरिसिंह दहिया ने मई दिवस के इतिहास पर विस्तार से प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता मास्टर जयकरण थे। कॉ. लाल जी, बिशम्भर, एडवोकेट उमेद सिंह दहिया तथा जयपाल सिंह ने भी सभा को संबोधित किया।

रिवाड़ी : 125वें मई दिवस के अवसर पर यहां ए.आई.यू.टी.यू.सी. से सम्बद्ध यूनियनों भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन, आशा वर्कर्स यूनियन, आंगनबाड़ी वर्कर्स एवं हैल्पर्स यूनियन, ग्रामीण चौकीदार यूनियन, खेत मजदूर फैडरेशन, हरियाणा मिनरल्स वर्कर्स यूनियन एवं जे.पी.ए. के तत्वावधान में राव तुलाराम पार्क से जिला सचिवालय तक जुलूस निकाला गया। प्रदर्शनकारी

नारे लगा रहे थे मई दिवस जिन्दाबाद, मई दिवस के शहीद अमर रहें।

प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व यू.टी.यू.सी. के प्रान्तीय नेता कामरेड राजेन्द्र सिंह, भवन निमार्ण कारीगर मजदूर यूनियन के नेता कॉ. बलराम, आंगनबाड़ी वर्कर्स एवं हैल्पर्स यूनियन की जिला प्रधान राजबाला, जिला सचिव कृष्णा यादव, आशा वर्करों की जिला प्रधान राजबाला यादव एवं सचिव सुषमा, खेत मजदूर फैडरेशन के नेता राजबीर, कर्मचारी नेता हरिसिंह मुलौधिया, जे.पी.ए. के नेता शेरसिंह, कृषक खेतमजदूर संगठन के जिला सचिव कॉ. रामकुमार, डीवाईओ के जिला सचिव अनिल, फूलसिंह, दूलीचन्द ने किया। रैली को मुख्यवक्ता एआईयूटीयूसी के कॉमरेड राजेन्द्रसिंह ने सम्बोधित किया।

भिवानी : 1 मई 2011 को यहां एआईयूटीयूसी से सम्बद्ध भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन की ओर से मई दिवस के अवसर पर स्थानीय श्री चेतराम प्रजापति धर्मशाला से नेहरू पार्क तक जलूस निकाला गया जिसमें सैकड़ों मजदूर-कर्मचारी शामिल हुए। वहाँ हुई सभा को एआईयूटीयूसी के राज्य कमेटी सदस्य कॉ. रामफल के अलावा भवन निर्माण कारीगर मजदूर यूनियन के जिला सचिव कॉ. धर्मबीर, आजाद, मनीराम, रामफल, देवदत, यूनियन के जिला अध्यक्ष वजीर आदि मजदूर नेताओं ने संबोधित किया ।

मुम्बई : 125वें मई दिवस के अवसर पर पहली मई को मुम्बई से लगते जिले थाणे के भिवंडी में आमपाड़ा, खण्डु चौक पर एक जनसभा हुई। रोजगार एवं श्रम अधिकार बचाओ समिति, भिवंडी के अध्यक्ष कॉ. अहमद की अध्यक्षता में सभा हुई। मुख्य वक्ता एआईयूटीयूसी के सचिवमण्डल सदस्य कॉ. आर.के. शर्मा के अलावा एआईयूटीयूसी के कॉ. ए.के. त्यागी, तरक्की पसन्द बुद्धिजीवी, भिवंडी से एडवोकेट शमीम आजमी और श्रम व रोजगार बचाओ समिति के संगठक कॉ. कुमार कुलश्रेष्ठ ने भी सभा को सम्बोधित किया।

कानपुरः एआईयूटीयूसी की कानपुर इकाई द्वारा

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. वी.एन. सिंह

गुरुदेव पैलेस चौराहा स्थित साकेत गेस्ट हाउस में मई दिवस के अवसर पर सभा की गई। सभा में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्रियों सहायिकाओं, आशाकर्मियों, रोडवेज, आईटीआई, डेयरी, इन्जीनियरिंग, रेलवे, पालीटेनिक्स, फण्ड ऑफिस आदि विभागों से बड़ी संख्या में कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। एआईयूटीयूसी के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. राजबली ने सभा की अध्यक्षता की और जिला संयोजक कॉ. धर्मदेव ने सभा का संचालन किया। सभा को मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) उ.प्र. राज्य सचिव कॉ. वी.एन. सिंह, आँगनवाड़ी कार्यकर्त्री एवं सहायिका वेलफेयर एसोसिएशन उ.प्र. की राज्य अध्यक्षता कॉ. लता शर्मा, एआईयूटीयूसी, उ.प्र. आशा यूनियन के प्रदेश अध्यक्ष कॉ. बालेन्द्र कटियार आदि ने संबोधित किया। एसयूसीआई(सी) उ. प्र. राज्य सांगठिक कमेटी सदस्य कॉ. सपन चटर्जी ने मई दिवस को मजदूर दिवस घोषित किये जाने की सरकार से माँग का प्रस्ताव रखा जिसका सभा में उपस्थित सभी लोगों ने समर्थन किया।

मिड डे मील वर्कर संघर्ष की राह पर

नारनौल (हरियाणा) : 9 मई को यहाँ मिड डे मील वर्कर्स यूनियन, जिला महेन्द्रगढ़ सम्बन्धित एआईयूटीयूसी ने अपनी माँगों के पक्ष में जिला प्रधान संजू देवी व जिला सचिव खजानी देवी के नेतृत्व में चितवन वाटिका में सभा की। वहाँ से जुलूस के रूप में अपनी माँगों के नारे लगाते हुये उपायुक्त कार्यालय पहुंचकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन उपायुक्त, नारनौल को सौंपा। सभा की अध्यक्षता सन्जू देवी ने की। सभा का संचालन हरियाणा संयुक्त कर्मचारी मंच के जिला प्रधान मास्टर सूबेसिंह यादव ने किया।

सन्जू देवी ने सरकार से माँग की कि मिड डे मील वर्करों व इसकी व्यवस्था में लगी स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को 5500 रुपये मासिक मानदेय मिलना चाहिए। छुट्टियों के पैसे नहीं कटने चाहिएं, काम की जगह छाया का प्रबन्ध हो। सभा को सम्बोधित करते हुए एआईयूटीयूसी के सर्वभारतीय सचिव मण्डल के सदस्य कॉ. सत्यवान कहा कि मिड डे मील के नये कार्यकम में वर्करों को बहुत काम करना पड़ता है तथा उनको मिलने वाला 1000 रुपये मानदेय ऊंट के मुँह में जीरे के समान है तथा महिला सशक्तीकरण के नाम पर क्रूर मजाक है। उन्होंने स्कूलों के राशन की समय पर आपूर्ति व उत्तम किस्म का राशन भिजवाने की माँग की। सभा को आंगनबाड़ी वर्करस व हैल्परस यूनियन नांगल चौधरी की प्रधान ब्रह्मा व सचिव बिमला, ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन के जिला प्रधान बलबीर सिंह, हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ के जिला प्रधान मास्टर ओमप्रकाश, रोडवेज से शेर सिंह, आशा वर्कर यूनियन सर्कल सिहमा की प्रधान आशा देवी व शारदा देवी, ऑल इण्डिया यू.टी.यू.सी. राजस्थान के राज्य सदस्य कॉ. छाजूराम रावत, कॉ. राजेन्द्र सिंह एडवोकेट, महिला सांस्कृतिक संगठन की कविता, आंगनवाड़ी वर्करस व हैल्परस यूनियन की रेवाड़ी जिला सचिव कृष्णा यादव, डी.वाई.ओ. के सतीश, सुभाष व विजेन्द्र ने भी सभी माँगों का समर्थन किया। प्रदर्शन में जिले भर के स्कूलों से मिड डे मील वर्करों ने बढ़चढ़कर भाग लिया।

कृषि भूमि अधिग्रहण के खिलाफ किसान सम्मेलन

किसानों को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड अनूप सिंह

रोहतक (हरियाणा): कृषि भूमि के अधिग्रहण, बढ़ती महंगाई, तेल पदार्थो-बिजली दरों व रजिस्ट्री फीस में बढ़ोतरी, चूल्हा टैक्स दुबारा थोंपने के खिलाफ 15 मई को यहाँ छोटूराम पार्क में किसान सम्मेलन सम्पन्न हुआ। ऑल इण्डिया कृषक खेत मजदूर संगठन (एआईकेकेएमएस) के प्रदेश अध्यक्ष कॉमरेड अनूप सिंह मातनहेल ने इसकी अध्यक्षता की और प्रदेश सचिव कॉ. विजय कुमार ने मंच संचालन किया। सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव में पेट्रोल के दामों में 5 रुपये लीटर की बढ़ोतरी का कड़ा विरोध किया और इन पर तेल कम्पनियों के नियन्त्रण को समाप्त करने की माँग की। दूसरे प्रस्ताव में भट्टा पारसौल(उत्तर प्रदेश) में किसानों पर बसपा सरकार के दमन-चक्र की कड़ी निन्दा की और उच्च स्तरीय न्यायिक जाँच करने, दोषी अधिकारियों को दण्डित करने, उपजाऊ कृषि भूमि अधिग्रहण पर पूर्ण रोक लगाने की माँग की।

सम्मेलन के बाद छोटूराम चौक पर जो जोरदार विरोध प्रदर्शन करके पेट्रोल के दामों में वृद्धि का कड़ा विरोध किया गया और कांग्रेस-नीत यू.पी.ए. सरकार का पुतला फूंका गया।

सम्मेलन में हुड्डा सरकार को भूमि-घोटालों की सरकार बताया और सर्वोच्च न्यायालय के पीठासीन जज से इन भूमि घोटालों की जाँच कराने की माँग की। महंगाई, चौतरफा भ्रष्टाचार और जन जीवन में बढ़ते अपराधों के लिए सरकार की जनविरोधी नीतियों को जिम्मेवार ठहराया। किसानों की फसलों के लाभकारी मूल्य देने, ब्याज दर दो प्रतिशत वार्षिक करने, नरेगा में 250 रुपये मजदूरी करने, बढ़ाई गई रजिस्ट्री फीस वापस लेने, दुबारा थौंपा गया चूल्हा टैक्स (गृह-कर) रद्द करने की मांग की गई और किसान-खेतमजदूरों के जीवन के चुभते सवालों को लेकर प्रदेशव्यापी जोरदार आन्दोलन उठाने का संकल्प लिया गया। खरखौदा, खेड़ी साध व पंजोखरा(अम्बाला) समेत पाँचों आई.एम.टी. के खिलाफ चल रहे किसान आन्दोलन को सम्मेलन ने अपना पूर्ण समर्थन दिया। सम्मेलन में सैकड़ों किसान-खेतमजदूरों ने शिरकत की।

सम्मेलन को भूमि बचाओ संघर्ष समिति, कुण्डल(खरखौदा) के अध्यक्ष बलबीर सिंह राणा, सचिव हंसराज राणा, पूर्व विधायक सुखबीर फरमाणा, कृषक खेत मजदूर संगठन के प्रदेश उप-प्रधान कॉ. बाबूराम, झज्जर के जिला प्रधान कॉ. जयकरण व कॉ. करतार सिंह, रेवाड़ी से कॉ. रामकुमार, महेन्द्रगढ़ के प्रधान कॉ. बलबीर सिंह, करनाल से करतार सिंह मलिक, कैथल से कॉ. राजकुमार, भिवानी से कॉ. जिले सिंह, हिसार से कॉ. नन्दलाल व सूरतसिंह,, गुड़गांव से कॉ, जयनारायण और सोनीपत से कॉ. जयकरण ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर एसयूसीआई(सी) पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य व हरियाणा राज्य सचिव कॉ. सत्यवान भी मौजूद थे।

रांची में बस्ती बचाओ की माँग को लेकर छात्र-प्रदर्शन

रांची (झारखण्ड) : अतिक्रमण हटाओ के नाम पर बस्तियाँ उजाड़ने की सरकारी मुहिम के विरोध में 10 मई को बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में एचईसी क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों के सैकड़ों छात्रों ने प्रदर्शन किया। जुलूस जगन्नाथपुर चौक से शुरू हुआ और सेक्टर तीन गोलचक्कर होते हुए एचईसी मुख्यालय पहुँचा। एचईसी मुख्यालय के पास प्रदर्शनकारियों की पुलिस से थोड़ी सी झड़प हुई।

एआईडीएसओ के राज्य अध्यक्ष कॉ. मिन्टु पासवान के नेतृत्व में शिखा कुमारी, आशा तिर्की, ममता कुमारी, रमेश कुमार को लेकर एक 5 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने एच ई सी के वरिष्ठ मैनेजर ए. के. महापात्रा को एक ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में माँग की गई कि एच.ई.सी. क्षेत्र में स्थित मकानों को खाली करने का आदेश तुरन्त निरस्त किया जाये। एच ई सी क्षेत्र में झुग्गी-झोपड़ियों के विकास के लिए बीएसयूसी और जेएनएनयूआरएम की योजनाओं के लिए सरकार पर्याप्त फण्ड दे।

शहीद स्मृति सभा

इलाहाबाद: जलियांवाला बाग हत्याकांड दिवस के अवसर पर 14 अप्रैल को यहाँ अखिल भारतीय महिला सांस्कृतिक संगठन, एआईडीवाईओ व ऑल इण्डिया डीएसओ के संयुक्त तत्वावधान में एक रैली हुई और बाद में जनसभा हुई सभा के मुख्य वक्ता जाने-माने सामाजिक कार्यकर्ता असगर अली इन्जीनियर थे। सभा का संचालन कॉ. राज बिहारी लाल श्रीवास्तव ने किया। सभा में सरकार द्वारा किये जा रहे अधिकारों के हनन का विरोध किया गया और जनजीवन के ज्वलन्त मुद्दों को उठाया गया। सभा में भारी संख्या में छात्रों, नौजवानों, शिक्षकों, अधिवक्ताओं व आम नागरिकों ने शिरकत की।

आइंस्टाइन को याद किया गया

पिलानी : 18 अप्रैल को यहाँ आल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन एवं आफ इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्टस आर्गेनाइजेशन के संयुक्त तत्वावधान में आइनस्टाइन का 56वां स्मृति दिवस मुख्य बाजार पार्क में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. रविकान्त पाण्डेय ने की। अन्य वक्ताओं में शामिल थे कॉमरेड सुभाष सुजडौला, विष्णु शर्मा, प्रदीप दिनोदिया, व शंकर दैइया। कार्यक्रम का संचालन कॉ. राजू लुहार ने किया।

शिक्षा में भ्रष्टाचार, सेमेस्टर प्रथा, शिक्षा के बाजारीकरण व व्यापारीकरण और बेतहाशा फीस बढ़ोतरी के खिलाफ सम्मेलन

सूरत (गुजरात): शिक्षा क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार, स्कूल-कॉलेजों में लागू सेमेस्टर प्रथा, शिक्षा के बाजारीकरण व व्यापारीकरण और स्व वित्तपोषित स्कूल-कॉलेजों में बेतहाशा फीस बढ़ोतरी के खिलाफ 15 मई को गुजराती साहित्य परिषद हॉल में ऑल इण्डिया स्टूडेन्टस ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीएसओ) द्वारा एक सम्मेलन आयोजित किया गया। सम्मेलन में छात्र-शिक्षकों सहित अभिभावकों व शिक्षाप्रेमी नागरिकों ने भाग लिया।

सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति, गुजरात के अध्यक्ष प्रो. रोहितभाई शुक्ला ने देश-प्रदेश में शिक्षा के स्तर पर चिन्ता जतायी। उन्होंने दिखाया कि सरकार बड़े-बड़े पूंजीपतियों से सांठगांठ करके तरह-तरह के बहानों से शिक्षा का पूरी तरह बाजारीकरण-व्यापारीकरण कर रही है। समिति के राज्य सचिव डा. भरत मेहता ने सेमेस्टर प्रथा के खतरों पर प्रकाश डाला और राष्ट्रीय कवि झवेरचंद मेघानी का कथन याद दिलाया। एआईडीवाईओ के गुजरात राज्य कमेटी सचिव का जयेश पटेल, एआईडीएसओ के राज्य अध्यक्ष कॉ. मुकेश सेमवाल, उत्तमभाई परमार, कार्तिकेयभाई भट्ट, प्रो. शंकरभाई पटेल, दमयन्तीबेन पारेख, प्रह्लाद राय अवस्थी, मीनाक्षीबेन जोशी व अहमदाबाद, बडोदरा, सूरत आदि से छात्रों ने भी अपने सुझाव व विचार रखे।

जनकभाई दवे ने मानव अधिकारों पर कविता पाठ किया। मंच संचालन एआईडीएसओ, गुजरात राज्य कमेटी सचिव कॉ. भाविक राजा ने किया।

पटना में पार्टी स्थापना दिवस...

(पृष्ठ 2 का शेष)

हमारे देश में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर अनेक पार्टियाँ थीं। बावजूद इसके कॉमरेड शिवदास घोष ने इस पार्टी की स्थापना क्यों की? क्योंकि मैंने पहले ही कहा है कि पार्टी वर्ग के लक्ष्य की पूर्ति करने का औजार है, जिसके जरिये मुक्ति हासिल होती है। बिना पार्टी के मुक्ति हासिल नहीं हो सकती। जिस पार्टी से शोषण कायम होता है, उसी पार्टी से शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती। इस बात को समझ लीजिए। जिस औजार से कोई मशीन बनी, उसी औजार से पंखा नहीं बनेगा। खास उद्देश्य के लिए खास लक्ष्य लेकर कोई चीज बनायी जाती है। सबके लिए अलग–अलग औजार होना चाहिए। जिस औजार से हमने माइक बनाया, उसी औजार से टेबुल नहीं बन सकता। उसके लिए अलग औजार होना चाहिए। पंखे के लिए, माइक के लिए, हर चीज के लिए अलग–अलग औजार होना चाहिए। जिस औजार से शोषण कायम किया जाता है, उसी औजार से शोषण खत्म नहीं हो सकता। आप जो चाहते हैं, उसे पूरा करने के लिए आपकी अपनी पार्टी होनी चाहिए। पूँजीपति वर्ग ने जो राजसत्ता खडी की, जिसके जरिये वह शोषण करता है, उस राजसत्ता के जरिये शोषण से मुक्ति नहीं मिल सकती। शोषण से मुक्ति के लिए अलग औजार चाहिए, अलग मशीनरी चाहिए। पार्टी क्या है? बगैर अपनी पार्टी के कोई भी वर्ग अपना उद्देश्य पूरा नहीं कर सकता। बगैर पार्टी के वर्ग अपने लक्ष्य की पूर्ति नहीं कर सकता। ये जो पूँजीपति वर्ग ने देश में शोषण कायम किया, उसके लक्ष्य की पूर्ति के लिए उसकी पार्टी काम कर रही थी। कांग्रेस, भाजपा आदि पार्टियाँ उसके हित में काम कर रही थीं। हमारे देश में शोषित वर्ग, मजदूर–किसान शोषण से पीड़ित हैं, शोषण से मुक्ति चाहते हैं। शोषण से मुक्ति के लिए उनके पास औजार होना चाहिए, जिसके सहारे वे अपने लक्ष्य को हासिल कर सकें। क्या वह औजार था? वह औजार उनके पास नहीं था।

हमारे देश में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर सीपीआई, उसके बाद सीपीआई(एम), उसके बाद नक्सलपंथी के नाम पर हम जिन पार्टियों को देख रहे हैं, इनके अलावा और भी पार्टियाँ हैं जो मार्क्सवाद–लेनिनवाद की बात करती हैं। मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर हमारे देश में मात्र एक ही पार्टी नहीं है, अनेक पार्टियाँ हैं। एसयूसीआई से पहले सीपीआई थी। एसयूसीआई से पहले आरएसपी थी। एसयूसीआई से पहले फॉरवर्ड ब्लाक था। एसयूसीआई से पहले आरसीपी आई थी। एसयूसीआई से पहले बोल्शेविक पार्टी थी। एसयूसीआई से पहले वर्कर्स पार्टी थी। ये सभी पार्टियाँ मार्क्सवाद–लेनिनवाद का नाम लेकर चल रही थीं। हमारे देश में मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर इतनी सारी पार्टियों के रहने के बावजूद कॉमरेड शिवदास घोष इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि हमारे देश में आजादी आंदोलन के दौरान जिस तरह पूँजीपतियों की पार्टी कांग्रेस थी, उसी तरह गरीब किसान–मजदूरों की बात करने वाली, मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर चलने वाली सीपीआई थी। मार्क्सवाद–लेनिनवाद की बात करने वाली और भी पार्टियाँ थीं। फिर क्यों ऐसा हुआ? मार्क्सवाद–लेनिनवाद के आधार पर शोषित जनता से शोषण से मुक्ति के लिए जो पार्टी तैयार हुई, आजादी आंदोलन में उसके शामिल रहते हुए भी पूँजीपति वर्ग ने सत्ता पर कब्जा जमा लिया। ऐसा किस वजह से हुआ? मार्क्सवाद–लेनिनवाद के नाम पर हमारे देश में पार्टी तो थी। सीपीआई थी। और कई पार्टियाँ थीं। मार्क्सवाद–लेनिनवाद का नाम लेकर चलने वाली, गरीबों की बात करने वाली इतनी सारी पार्टियों की मौजूदगी के बावजूद मुट्ठीभर पूँजीपतियों ने कैसे पूरी सत्ता पर कब्जा जमा लिया? ऐसा कैसे हुआ? दरअसल लेकिन मजदूर–किसानों की मुक्ति के लिए जो पार्टी बनी, वह सही तरीके से नहीं बनी। ऐसी पार्टी बनाने के लिए जिस तरीके से संघर्ष होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। इस बात को आपको गहराई से समझना होगा कि मार्क्सवाद–लेनिनवाद का नाम लेकर कोई पार्टी बन जाने से ही वह मार्क्सवादी–लेनिनवादी पार्टी नहीं बन जायेगी। पूँजीपति वर्ग शोषण के लिए, लूट के लिए जिस प्रक्रिया के आधार पर पार्टी बनाता है, उसी प्रक्रिया से शोषण से मुक्ति के लिए पार्टी नहीं बन सकती। उसको बनाने की प्रक्रिया अलग होगी, संघर्ष अलग होगा।

क्या कुछ लोग एक साथ मिलकर पार्टी बना देने मात्र से ही पार्टी बन जाती है? पार्टी ऐसे नहीं बनती। इसलिए मार्क्सवाद–लेनिनवाद का काफी नारा लगाने पर भी, मार्क्सवाद–लेनिनवाद का काफी काफी झंडा फहराने पर भी गरीब मजदूर–किसानों की पार्टी नहीं बन सकी। क्योंकि गरीब मजदूर–किसानों की पार्टी बनाने के लिए जिस खास तरीके का संघर्ष करना चाहिए था, वह संघर्ष नहीं हुआ। मजदूर–किसानों की मुक्ति के लिए उनकी पार्टी खास संघर्ष से ही बनती है। अगर वह खास संघर्ष नहीं चलाया गया, तो पार्टी नहीं बनेगी। जो मशीन आप तैयार करना चाहते हैं, उस मशीन को तैयार करने की प्रक्रिया अगर आपको मालूम नहीं है, तो आप जिन्दगी भर कोशिश करके भी उस मशीन को तैयार नहीं कर पायेंगे। पहले आपको जानना होगा कि मशीन किस प्रक्रिया से तैयार होगी। मजदूर–किसानों की पार्टी निर्मित करने के लिए जिस खास संघर्ष की जरूरत है, अगर वह संघर्ष नहीं चलाया गया, तो पार्टी तैयार नहीं होगी।

ऐसी बात नहीं है कि उनमें ईमानदारी नहीं थी। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाा कि वे गैर ईमानदार नहीं थे। उन्होंने कोई धोखाधड़ी नहीं की। लेकिन उन्होंने उस प्रक्रिया को नहीं अपनाया, जिस खास प्रक्रिया के आधार पर संघर्ष कर शोषित वर्ग की पार्टी निर्मित की जाती है। एक खास प्रक्रिया के तहत संघर्ष चलाकर शोषित वर्ग की पार्टी निर्मित करना ऐतिहासिक नियम है। इसे कोई रोक नहीं सकता। कोई परिवर्तित नहीं कर सकता। उस खास प्रक्रिया को अपनाने से ही ऐसी पार्टी का निर्माण संभव है।

कॉमरेड शिवदास घोष ने आजादी के बाद जब देखा कि आजादी का सारा फल मुट्ठीभर पूँजीपतियों के हाथों में चला गया, तो उन्होंने इसका कारण ढूँढ़कर पता लगाया कि देश में मजदूर–किसानों की अपनी सही पार्टी नहीं है। अगर हम शोषण से मुक्ति चाहते हैं, जनमुक्ति चाहते हैं, तो इसके लिए पार्टी चाहिए। बिना पार्टी के मुक्ति नहीं मिल सकती। अगर वह पार्टी नहीं है, तो वह तैयार करनी होगी।

आपने सुना कि कॉमरेड शिवदास घोष ने किस स्थिति में पार्टी निर्माण का काम शुरू किया। खास तरीके से, खास नियम से, खास संघर्ष से उन्होंने इस पार्टी का निर्माण किया। उस नियम को, उस संघर्ष को जानकर, समझकर उस नियम के आधार पर पार्टी तैयार की जा सकती है। पार्टी का राजनैतिक विश्लेषण मुख्य बात होती है। पूँजीवाद–विरोधी समाजवादी क्रांति पार्टी की मूल राजनैतिक लाइन है। पार्टी की राजनैतिक लाइन को ठीक तरीके से समझना काफी आवश्यक है। इसका implication क्या है? इसका मतलब क्या है? समाजवादी क्रांति के जरिये पूँजीवाद को उखाड़ फेंकना–यही पार्टी का मूल लक्ष्य है। और इसी वजह से पार्टी का निर्माण किया गया। अगर सही प्रक्रिया के आधार पर, सही तरीके से पार्टी निर्मित नहीं की जाय, तो पार्टी की रक्षा नहीं हो पायेगी। इसके लिए जरूरत है संस्कृति की।

आप लोगों को समझना चाहिए कि जो लोग हमारी पार्टी के सम्पर्क में आये हैं, पार्टी के नेता, कार्यकर्ता, समर्थक, जो कॉमरेड शिवदास घोष की सीख के आधार पर इस पार्टी से जुड़े हुए हैं, उनसे आज मैं 24 अप्रैल को कहना चाहूँगा कि पार्टी की जो मूल राजनैतिक लाइन है–समाजवादी क्रांति के जरिये पूँजीवादी राजसत्ता को उखाड़ फेंककर समाजवादी राजसत्ता कायम करना–इसके लिए क्रांति चाहिए। यह जो मूल लक्ष्य है, इसकी मर्मवस्तु है उसकी संस्कृति। संस्कृति अगर नहीं रहे, तो सिर्फ पूँजीवाद–विरोधी समाजवादी क्रांति का नारा लगाने से ही क्रांति नहीं होगी। इसका कोई भी असर हमारे चरित्र पर नहीं पड़ेगा। क्रांति तब तक सफल नहीं होगी, जब तक हम इसकी संस्कृति को नहीं अपनायेंगे। सिर्फ नारा लगाने से ही क्रांति नहीं होगी।

पार्टी के तमाम कार्यकर्ताओं, नेताओं से मैं कहना चाहूँगा कि जो सीख कॉमरेड शिवदास घोष ने हमारे लिए रख छोड़ी है, वह है कि दुनिया में जो विचार आये हैं, दर्शन आये हैं, उसका मूल आधार है संस्कृति। मार्क्सवाद–लेनिनवाद का मूल आधार संस्कृति है। अगर संस्कृति के आधार पर हम अपने जीवन को परिवर्तित नहीं कर पाये, तो हम नारा भले लगा लें, लेकिन क्रांति नहीं होगी। हम क्रांतिकारी नहीं बन पायेंगे। क्रांति में नेतृत्व दे पाना हमारे लिए संभव नहीं होगा। हममें क्रांतिकारी चरित्र का निर्माण नहीं हो पायेगा। क्रांतिकारी चरित्र भी तो क्रांतिकारी संस्कृति के आधार पर ही निर्मित होता है।

पूँजीवादी समाज व्यक्ति–केन्द्रित समाज है। पहले अपने बारे में सोचो। बाद में दूसरों के बारे में सोचो। व्यक्ति सम्पत्ति के आधार पर व्यक्ति मालिकाने के आधार पर यह समाज है। यहाँ कहा जाता है कि पहले खुद के बारे में सोचो, बाद में परिवार के बारे में सोचो, फिर अपने पड़ोसियों के बारे में सोचो और तब समाज के बारे में सोचो। पहले अपने बारे में सोचो। यह व्यक्तिवादी संस्कृति है, पूँजीवादी संस्कृति है। इस संस्कृति का प्रभाव ही लोगों पर ज्यादा है। इस हॉल में जितने लोग बैठे हुए हैं, अगर बारीकी से विचार किया जाए, तो देखा जायेगा कि ज्यादातर लोग इसी संस्कृति से प्रभावित हैं।

पूँजीवाद और समाजवाद में क्या अंतर है? पूँजीवाद व्यक्ति सम्पत्ति के आधार पर होता है, व्यक्ति मालिकाने के आधार पर होता है। पूँजीवाद का जो आर्थिक ढाँचा है, जो नियम है, वह व्यक्ति मालिकाने पर आधारित है। हमारे देश में जो व्यवस्था लागू है, वह व्यक्ति मालिकाना आधारित है। पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था में मालिक–मजदूर का संबंध काम करता है। यहाँ उत्पादन का मूल लक्ष्य है मुनाफा कमाना। समाज में रह रही करोड़ों जनता की रोजाना की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए इस समाज में उत्पादन नहीं होता है। साधारण–सी बात है। उद्योग हो, जमीन हो या खदान हो या बागान हो–जहाँ भी उत्पादन होता है वह होता है मुनाफे के लिए। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमारे देश में उत्पादन नहीं होता है। हमारे देश में उत्पादन होता है मुनाफे के लिए, लूट के लिए। चाहे जमीन में उत्पादन हो, चाहे उद्योग में उत्पादन हो, चाहे बागानों में उत्पादन हो या फिर खादानों में–जहाँ भी अपने देश में उत्पादन हो रहा है, उत्पादन का मकसद है मुनाफा कमाना। निजी मुनाफे के आधार पर यह सामाजिक व्यवस्था कायम की गयी है। आज इतनी महंगाई क्यों है? गरीब किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य क्यों नहीं मिल रहा है? हमारे देश के मजदूरों को रोजगार क्यों नहीं है? अगर रोजगार मिल रहा है, तो वैसा नहीं जिससे वे अपने बच्चों की ठीक से परवरिश कर सकें। आज अगर रोजगार है, तो वह कल भी रहेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। यह जो स्थिति है, इसका मूल कारण क्या है? इसका मूल कारण है सामाजिक व्यवस्था, पूँजीवादी सामाजिक व्यवस्था। पूँजीवादी व्यवस्था में मुनाफे के लिए , निजी मुनाफे के लिए उत्पादन होता है न कि जरूरत के लिए। आपको खाना नहीं मिलता है। पहनने के लिए कपड़े नहीं मिलते हैं। आप कपड़े तभी खरीद सकेंगे, जब आप मालिक को मुनाफा देंगे। जब आपके पास उतने पैसे होंगे। वर्ना आपको नंगे रहना पड़ेगा। मालिक अपनी मशीन से कपड़ा तैयार करता है बाजार में बेचकर मुनाफा कमाने के लिए। देश को जरूरत है, इसलिए कपड़ा तैयार होता है–यह झूठ है। इस समाज में कोई भूखों मर भी जाता है, तो कोई उसकी खोज–खबर नहीं रखता। अपने उपाय से, अपने रोजगार से, अपने पैरों पर खड़े होकर, अपनी कमाई से कोई यदि खुद को जिन्दा रह सकता है, तो जिन्दा रहेगा। राज्य इसके लिए जिम्मेवार नहीं है। समाज के लिए इसके लिए जिम्मेवार नहीं है। इस देश में गरीब परिवार के कितने लड़के–लड़कियाँ पढ़ाई नहीं कर पाते हैं। क्योंकि उनके पास पैसे नहीं हैं। राज्य ने उनके लिए क्या किया? अगर आप अपने बूते पर पढ़ाई कर सकते हैं, तो कीजिए। अगर आप अपने बल पर रोजगार का प्रबंध कर सकते हैं, तो कीजिए। यह क्या! हम एक अजीब देश में रह रहे हैं। यहाँ हमारे जीवन की कोई गारंटी नहीं है। अपने जीवन की गारंटी हम खुद हैं। अगर कुछ करके हम जिन्दा रह सकें, तो रहेंगे। अगर जिन्दा नहीं रह सकें, मर जायेंगे। कोई खोज–खबर रखने वाला नहीं है। कैसा यह देश है? क्या यह समाज है? इस समाज में कोई गारंटी नहीं है। यह पूँजीवादी समाज है। इस समाज में उत्पादन होता है मुनाफे के लिए। सरकार हर साल हजारों करोड़ रुपये टैक्स वसूल रही है। उसमें से गरीबों के लिए कितना खर्च होता है? नहीं के बराबर। और मालिकों पर कितना खर्च होता है? उन पर हर साल हजारों करोड़ रुपये खर्च होते हैं। सरकार तो पूँजीपतियों की है। यह गरीबों की सरकार नहीं है। ये पैसे तो हमारे पैसे हैं। इस सरकार को हटना चाहिए।

पार्टी की मर्मवस्तु है संस्कृति। व्यक्ति केन्द्रित, व्यक्तिगत स्वार्थ के आधार पर, व्यक्तिगत सम्पत्ति के आधार पर, व्यक्ति मानसिकता के आधार पर हर व्यक्ति के अंदर पूँजीवादी मानसिकता तैयार की गयी है। चाहे गरीब हो, चाहे मजदूर हो, चाहे गरीब किसान हो, उसे

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पटना में पार्टी स्थापना दिवस...

(पृष्ठ 6 का शेष)

पहले अपने बारे में सोचने को कहा जाता है। यह जो अपने बारे में सोचने की बात है वह पूँजीवादी मानसिकता है। हम क्रांति चाहते हैं। हम शोषण पर आधारित इस व्यवस्था को खत्म करना चाहते हैं। कौन खत्म करेगा? क्या हम खत्म कर पायेंगे? हमारे अंदर भी शोषण की मानसिकता काम कर रही है। जिस मानसिकता से शोषण होता है, हम भी उसी मानसिकता को लेकर चल रहे हैं। हम भी तो पहले अपने बारे में सोचते हैं, फिर समाज के बारे में सोचते हैं। पहले अपने पैरों पर खड़े हो जाओ, फिर घर-परिवार के बारे में सोचो, समाज के बारे में सोचो। पहले खुद काम-धंधा करो, अपना कॅरियर देखो, खुद जिन्दा रहो, खुद दो वक्त के खाने का इंतजाम करो, फिर समाज के बारे में सोचो। यह तो पूँजीवादी संस्कृति है। पूँजीवादी संस्कृति को लेकर क्या हम इस समाज को खत्म कर सकते हैं? यह कभी संभव नहीं है। हम पूँजीवाद को खत्म कर समाजवाद में जाना चाहते हैं जहाँ समाज व्यक्ति की तमाम आवश्यकताओं के लिए जिम्मेवार होगा। वहाँ कोई व्यक्तिगत मालिकाना नहीं होगा। क्योंकि व्यक्तिगत मालिकाने की व्यवस्था पूँजीपतियों ने कायम की है। सामूहिक मालिकाने में समाज के सभी लोग मिलकर उत्पादन करेंगे और सभी का उस पर मालिकाना होगा।

हमारे देश में जो उत्पादन होता है, हम जो भोजन करते हैं, कपड़े पहनते हैं–सभी चीजों का उत्पादन होता है। उत्पादन कैसे होता है? सारी चीजों का उत्पादन प्रकृति से होता है। जमीन में उत्पादन होता है। जमीन क्या है? जमीन प्रकृति से मिली है। सारी जमीन प्रकृति की थी। किसी ने जमीन बनायी नहीं। जमीन प्रकृति की थी। बाद में व्यक्ति उस जमीन का मालिक बन बैठा। हम जो उत्पादन करते हैं, दो वक्त भोजन करते हैं, कपड़े पहनते हैं। उत्पादन करने के लिए कच्चा माल(raw material)कहाँ से आता है? आता है प्रकृति से, आता है जमीन से, आता है खदान से। पानी, हवा, पेड़–सब कुछ प्रकृति से मिलता है। सब कुछ प्रकृति का दिया हुआ है। इसके साथ आदमी का श्रम जुड़ता है। आदमी का श्रम अगर न रहे, तो उत्पादन नहीं होगा। आदमी प्रकृति की उपज है। आदमी कहाँ से आया? जीव जगत, प्राणी जगत, आदमी प्रकृति की सृष्टि है। सब कुछ प्रकृति से ही आया है। जमीन भी प्रकृति की ही है। खदान भी प्रकृति की है। पेड़ भी प्रकृति का है। और उसके साथ श्रम को लगाकर हम उत्पादन करते हैं। सिर्फ प्रकृति से ही उत्पादन नहीं होता है। उसके साथ आदमी का श्रम लगाना पड़ता है। किसी भी चीज का उत्पादन क्यों न हो–चाहे जमीन में उत्पादन हो, चाहे खदान में उत्पादन हो, चाहे उद्योग में उत्पादन हो–उसका कच्चा माल प्रकृति से प्राप्त होता है। फिर कुछ लोग इसके मालिक बन गये। कैसे बन गये? इसका भी इतिहास है। इस समाज में कोई व्यक्ति मालिक बन कर पैदा नहीं हुआ। समाज विकास की प्रक्रिया में कुछ लोग मालिक बन गये। यह जुल्म का इतिहास है, अत्याचार का इतिहास है। यह अलग विषय है। जहाँ हमें जाना है, वह समाजवाद है। वहाँ सामूहिक मालिकाना होगा। इसमें हर कोई उत्पादन में भाग लेगा, हर कोई मालिक होगा। कोई खास व्यक्ति मालिक नहीं होगा। निजी मालिक बनकर दूसरों के श्रम का जो शोषण किया जाता है, ऐसा नहीं होगा। मजदूर अथक मेहनत कर उत्पादन करते हैं। किसान अपना खून-पसीना बहाकर फसल तैयार करता है। वे भूखों मरते हैं। समाजवाद में ऐसा नहीं होगा। हम समाजवाद में जाना चाहते हैं। इसका इतिहास है। वहाँ हम जायेंगे ही।

पूँजीवाद में विकास की जितनी संभावनाएँ थीं, वे खत्म हो गयीं। पूँजीवाद की आज क्या हालत है? आज पूँजीवाद सिर्फ हमारे देश में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में, बड़े पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में–अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान–हर जगह संकटों से घिरा है। पूँजीवाद में और विकास संभव नहीं है। पूँजीवाद अपने अंतिम दौर में आ गया है। उसके आगे बढ़ने की अब कोई संभावना नहीं है। अगर पूँजीवाद रहेगा, तो आर्थिक संकट बढ़ता ही जायेगा। पूँजीवाद आज समाज में मुक्ति नहीं ला सकता। लेकिन पूँजीवाद अपने-आप खत्म नहीं होगा। पूँजीवाद को खत्म करने के लिए सही कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में क्रांति चाहिए। बगैर क्रांति के पूँजीवाद का खात्मा नहीं होगा। जब तक पूँजीवाद खत्म नहीं होगा, तब तक संकट बढ़ता ही जायेगा, लोग मरते ही जायेंगे। अपने परिवार की परवरिश न कर पाने के चलते हमारे देश में कितने किसान आत्महत्या कर रहे हैं। रोजगार खोकर रोजाना कितने मजदूर आत्महत्या कर रहे हैं। हम कहते हैं कि जब मरना ही है, तो लड़कर मरो। ऐसे मरने से क्या फायदा? जिस समाज ने ऐसी स्थिति पैदा की कि हम अपने बच्चों की परवरिश न कर सकें, उन्हें स्नेह-प्यार न दे सकें, उस समाज को तोड़ो। इस समाज को तोड़ना होगा। आत्महत्या इसका निदान नहीं है। किसान भूखों मर रहे हैं। अपने बच्चों के लिए दो वक्त के भोजन का जुगाड़ नहीं कर सकते। वे रोते हैं। मन में काफी दुख है और इसी दुख की वजह से वे आत्महत्या कर लेते हैं। आत्महत्या क्यों करो? लड़ो। सभी को जगाओ। इस व्यवस्था को खत्म करो। यह समाज अन्याय पर टिका है। इसके लिए पार्टी को मजबूत करना होगा। हम समाजवादी समाज चाहते हैं। यह भविष्य है। यह इतिहास है। यह विज्ञान है। यह मनगढ़ंत नहीं है। यह कल्पना नहीं है। दुनिया में समाजवाद तो आया है। सोवियत रूस ने रास्ता दिखाया है कि समाजवाद क्या कुछ कर सकता है। वे समाजवाद की रक्षा नहीं कर सके। कारण क्या था? कारण थी संस्कृति। विभिन्न क्षेत्रों में जितनी भी तरक्की क्यों न हो, अगर इसके अनुकूल संस्कृति में बदलाव नहीं आये, तो समाजवाद में भी धीरे-धीरे व्यक्तिवादी मानसिकता वाली, पूँजीवादी मानसिकता वाली संस्कृति हावी हो जायेगी। कम्युनिस्ट बनने के लिए व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं, सामूहिक स्वार्थ को अपनाकर सांस्कृतिक क्षेत्र में जो संघर्ष करना चाहिए, वह नहीं होने पर समाजवाद की रक्षा नहीं पायेगी। सभी की भलाई, सभी के विकास के साथ ही हमारा भी विकास है। अलग से हमारा विकास संभव नहीं है। यह जो सामूहिक चिंतन है, सामूहिक स्वार्थ है, इसके न आने से समाजवाद नहीं रह पायेगा। पूँजीवादी समाज को खत्म करके ही तो समाजवाद कायम किया गया। लेकिन सांस्कृतिक क्षेत्र में पुराने रूढ़िवादी विचार का अवशेष रह गया था और उसी से खतरा पैदा हुआ। कॉमरेड शिवदास घोष द्वारा निर्मित पार्टी में हम क्रांति के लिए अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं। हमें पार्टी की संस्कृति को अपनाना होगा, हमें सामूहिक संस्कृति को अपनाना होगा। हम जिनके साथ रह रहे हैं, हमें उनके सुख-दुख का भागीदार बनना होगा। हमें सिर्फ अपने बारे में ही नहीं सोचना है। हम जहाँ भी रहें, हमें सबके बारे में सोचना है। हमें सबकी भलाई सोचनी है। हमें सबकी सुविधाओं-असुविधाओं का ध्यान रखना है। यह व्यक्तिवाद को खत्म करने की संस्कृति है, सामूहिक स्वार्थ को अपनाने की संस्कृति है। इसी संस्कृति को अपनाने की जरूरत है। कॉमरेड शिवदास घोष ने ऐसा ही किया। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया कि संस्कृति ही मूल बात है। बगैर संस्कृति के पार्टी नहीं चल सकती। पार्टी जितनी भी ताकतवर क्यों न बन जाय, पार्टी क्रांति भी फतह कर ले, लेकिन क्रांति तब तक कामयाब नहीं हो पायेगी जब तक कि संस्कृति को न अपनाया जाय। पार्टी के तमाम कार्यकर्ता सामूहिकता के आधार पर चलने की कोशिश करें। आप जहाँ भी रहें, चाहे परिवार में रहें या फिर सेंटर में, सामूहिकता को अपने जीवन में अपनाइए। ऐसा नहीं होना चाहिए कि बस अपना हो गया, तो हो गया, बाकी लोगों के बारे में सोचने की जरूरत नहीं है। सबकी जरूरतों के बारे में सोचिए। यह जो मानसिकता है, यह जो चिंतन प्रक्रिया है, अपने अंदर का जो व्यक्तिवाद है, उसे खत्म कीजिए। यही व्यक्तिवाद हर जगह दिक्कत पैदा कर रहा है। पार्टी संगठन में भी अगर मेरी बात मान ली गयी, तो मैं खुश हो गया और अगर मेरी बात नहीं मानी गयी तो मेरा मन खराब हो गया। सामूहिकता के समक्ष आत्म समर्पण करना, सामूहिक निर्णय को सहर्ष मान लेना, व्यक्तिगत चिंतन के आधार पर न चलना–इसी तरह के चिंतन को अपनाने का संघर्ष करना होगा। अपनी चिंतन प्रक्रिया में, अपने आचरण-व्यवहार में, अपनी संस्कृति में व्यक्तिगत चिंतन को त्यागकर सामूहिक चिंतन को अपनाना होगा। दूसरे लोग अगर हमारी देखभाल करेंगे तो ठीक है, नहीं करेंगे तो भी ठीक है। छोड़ दो अपने को। अगर हम ऐसी स्थिति तैयार नहीं कर सकें कि लोग हमारी देखभाल करें, तब तो यह हमारी ही कमी है। अपने बारे में खुद मत सोचिए। अपने को दूसरों पर छोड़ दीजिए। इस संस्कृति को, सामूहिक संस्कृति को अपनाने की जरूरत है।

देश रो रहा है। क्रांति की जरूरत है। देश क्रांति के लिए हर तरह से तैयार है। पार्टी विस्तार की काफी संभावना है। पार्टी के लिए ऐसी स्थिति कभी नहीं आयी। हमें इस अनुकूल स्थिति का भरपूर इस्तेमाल करना है। पार्टी को ताकतवर बनाना है।

पहले तथाकथित कम्युनिस्टों–सीपीआई, सीपीआई(एम) की मार्क्सवाद-विरोधी हरकतों, मजदूर-विरोधी हरकतों के बारे में लोगों को बताना काफी कठिन था। इनके प्रति जनता में तब मोह था। पश्चिम बंगाल में 33 वर्षों से वाम मोर्चा का शासन रहा। आज किसी को यह बताने की जरूरत नहीं है कि सीपीआई, सीपीआई(एम) कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। लेकिन जब पश्चिम बंगाल में वाम मोर्चा सत्ता में आया था, तो विभिन्न राज्यों में इसका काफी प्रभाव तैयार हुआ था। उस जमाने में ही कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा था कि सीपीआई, सीपीआई(एम) का काम लोगों को धोखे में रखना है। आप जानते हैं कि मालिक अपने पैसे से मजदूर संगठन बनाते हैं। वे मालिक को बुरा-भला कहते हैं, उसे गाली-गलौज करते हैं। यही चरित्र आज तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियों का है। ये पार्टियाँ पूँजीपतियों के पैसे से चलती हैं। बगैर पूँजीपतियों की मदद के उनकी पार्टी नहीं चल सकती, उनकी सरकार नहीं चल सकती। उनको काफी प्रचार मिलता है। पूँजीपति वर्ग द्वारा संचालित और नियंत्रित मीडिया उनका काफी प्रचार करता है। आज सीपीआई(एम) के बारे में जनता का मोहभंग हो रहा है। आज यह बात उभर कर आ रही है कि एसयूसीआई(सी) ही जनता को मुक्ति दिला सकती है।

आज माओवादियों को भी बुर्जुआ मीडिया काफी प्रचार दे रहा है। ऐसी बात नहीं है कि उनकी बहुत ताकत है। आप माओवादियों की ताकत और हमारी पार्टी की ताकत को मिलाकर देखिए। पूरे हिन्दुस्तान में उनकी ताकत कितने राज्यों में है? उनकी ताकत कुछ गिने-चुने राज्यों में ही तो है। आंध्र प्रदेश में, बिहार में, झारखंड में, उड़ीसा में, छत्तीसगढ़ में कुछ है। बिहार में भी वे कितनी जगहों पर हैं। वे जंगल में रहते हैं। कभी-कभी बाहर आकर एक्शन करते हैं। जनता को आंदोलन के लिए तैयार करने का काम वे नहीं करते। वे कुछ व्यक्तियों की हत्या करते हैं। दो-चार लोगों की हत्या करने से क्रांति नहीं आ जायेगी। माओवादी के नाम पर जंगल में रहकर, जनता से अलग-थलग रहकर क्रांति नहीं होगी। पूरी राजसत्ता को बदलकर उसकी जगह पर नयी राजसत्ता की स्थापना करने का नाम क्रांति है। किसी एक पूँजीपति की हत्या कर देने से क्रांति नहीं हो जायेगी। एक पूँजीपति की हत्या करने से उसकी जगह दूसरा पूँजीपति आ जायेगा। पूँजीवाद एक व्यवस्था है, एक सिस्टम है। जब तक पूँजीवाद रहेगा, तब तक पूँजीपति रहेंगे। कम्युनिस्ट व्यक्ति हत्या की राजनीति नहीं करते हैं। वे सामाजिक व्यवस्था को, सिस्टम को बदलने का काम करते हैं। नक्सलपंथी कहा करते थे कि चीन के चेयरमैन हमारे चेयरमैन हैं। बाद में माओ त्से-तुंग ने खुद इसका खंडन किया। उस जमाने में भी चीन की स्थिति और भारत की स्थिति एक नहीं थी। उनके रास्ते से भारत में क्रांति नहीं आयेगी। इसलिए बुर्जुआ लोग उनका इतना प्रचार कर रहे हैं। माओवादियों के प्रचार के पीछे बुर्जुआ वर्ग का स्वार्थ जुड़ा है। कॉमरेड शिवदास घोष के रास्ते ही भारत में क्रांति होगी।

1948 में पश्चिम बंगाल के एक छोटे-से गाँव में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की स्थापना हुई थी। आज एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) भारत में छोटी ही सही, पर एक ताकत है। लेकिन हमारी कुछ कमजोरियाँ भी हैं। पार्टी ही जीवन होना चाहिए। बिहार में हमारी ताकत कम नहीं है। लेकिन हम उसका सही उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। जन आंदोलन और पार्टी के विकास के लिए कार्यकर्ताओं को जितना समय देना चाहिए, उतना समय वे नहीं दे पाते हैं। हमें अपने हर समय का पार्टी के लिए इस्तेमाल करना होगा। पार्टी संस्कृति को अच्छी तरह से अपने जीवन में अपनाना होगा। जनता के साथ निरंतर रहना होगा। जिस तरह मछली पानी के बिना नहीं रह सकती है, उसी तरह से पार्टी कार्यकर्ताओं को जनता के साथ निरंतर रहना होगा। अगर हम ऐसा कर सके, तभी स्थापना दिवस मनाना सार्थक होगा।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-12/1123/2009-2011
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 of Every Month

भट्टा पारसौल में...

(पृष्ठ 1 का शेष)

भागों में कृषि भूमि के जबरन अधिग्रहण के खिलाफ संघर्षरत किसानों व खेत मजदूरों पर जिस प्रकार से वहाँ की सत्ताधारी पार्टियाँ लाठी–गोली चलवाकर दमन का रास्ता ले रही है। यू.पी. की बसपा सरकार भी वही रास्ता अपना रही है। उसने यह साबित कर दिया है कि वह भूमिकाओं व बिल्डरों का हित साधने के लिए किसी भी दूसरी सत्ताधारी पार्टी से पीछे नहीं है। बसपा सरकार की इस क्रूरता ने किसानों व खेत मजदूरों पर बर्बरता पूर्ण हमलों के काले अध्याय में नये पन्ने जोड़ दिये हैं। सत्ताधारी पार्टियों की किसान–विरोधी नीतियों के खिलाफ एकताबद्ध होकर सही दिशा व नेतृत्व में संचालित जनआन्दोलन वक्त की जरूरत है। अत: हम किसानों–मजदूरों से ऐसे आन्दोलन को तेज व मजबूत बनाने की अपील करते हैं।

हम भट्टा–पारसौल कांड पर यू.पी. सरकार से माँग करते हैं कि इस जघन्य कांड की उच्च स्तरीय न्यायिक जाँच कराई जाये। लाठी–गोली चलाने का आदेश देने वाले पुलिस अधिकारियों को बर्खास्त कर उनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही की जाये। कृषि भूमि का जबरन अधिग्रहण बन्द किया जाये। सभी मृतको व घायलों के परिजनों को प्रर्याप्त मुआवजा दिया जाये और उनकी सम्पत्ति के नुकसान की भरपाई की जायें।

पेट्रोल के दामों में वृद्धि के विरोध में ....

(पृष्ठ 1 का शेष)

पीरागढ़ी अग्निकांड उद्योगपतियों व सरकार के मजदूर विरोधी रवैये के खिलाफ प्रदर्शन

पीरागढ़ी उद्योग नगर के जूता कारखाने में हुए भीषण अग्निकांड पर अपना रोष प्रकट करते हुए ऑल इण्डिया युनाइटेड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) की दिल्ली राज्य कमेटी ने 4 मई को प्रदर्शन किया। आई.टी.ओ. चौक पर एकत्र हुए प्रदर्शनकारियों ने अग्निकांड में मारे गये मृतकों के प्रति अपना दुख प्रकट करते हुए पहले दो मिनट का मौन रखा और फिर सरकार के रवैये के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए नारेबाजी की।

प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए एआईयूटीयूसी के दिल्ली राज्य सचिव हरीश त्यागी ने कहा कि घटना में मारे गये लोगों की असल संख्या छुपायी जा रही है। फैक्टरी में कोई कानून लागू नहीं था। इसके लिए मालिक व प्रबन्धक के साथ–साथ दिल्ली पुलिस व श्रम विभाग के अधिकारी भी जिम्मेदार हैं। इसलिए प्रशासन व मालिक मिल कर अनेक तथ्य भी नष्ट कर रहे हैं। कर्मकार एकता केन्द्र के महासचिव मैनेजर चौरसिया, बैंक एम्पलाइज यूनिटी फोरम, दिल्ली के संयोजक एस.एस.बक्सी, सरकारी कर्मचारियों के संगठन जेपीए के सहसचिव एस.एस.नेगी, नेशनल पब्लिक हैल्थ एलायन्स के प्रदेश सचिव वीरेन्द्र सिंह दहिया व अन्य यूनियनों के नेताओं ने इस घटना पर अपना गहरा दुख प्रकट करते हुए कहा कि यह अग्निकांड एक बार फिर यह बताता है कि दिल्ली में किस अमानवीय ढंग से उद्योग में मजदूरों से काम कराया जा रहा है। कारखाने के मालिक द्वारा बाहर से ताला बन्द करना और पहले भी कई बार आग लगने के बावजूद, उसकी रोकथाम के इन्तजाम न करना यह सिद्ध करता है कि मजदूरों को जानबूझ कर आग के हवाले कर दिया गया है।

दिल्ली की मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन भी दिया गया। जिसमें माँग की गई है कि घटना की सी.बी.आई. से जाँच कराई जाये। सभी मृतकों के परिजनों को 20–20 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाये। अग्निकांड के दोषी कारखाना मालिक व प्रबन्धक के साथ ही कानून पालन कराने में कोताही बरतने के दोषी सरकारी अधिकारियों पर हत्या का मामला दर्ज कर सख्त कार्यवाही की जाये।

किसानों पर गोलीबारी का तीव्र विरोध

मुरादाबाद (उ.प्र.): जिला गौतम बुद्ध नगर भट्टा पारसौल गाँव में की गई पुलिस की बर्बर कार्यवाही के विरोध में 10 मई को एसयूसीआई(सी) की राज्य कमेटी के आह्वान पर जिला के कार्यकर्ताओं व समर्थकों ने जिलाधिकारी कार्यालय, मुरादाबाद के समक्ष शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी की मार्फत महामहिम राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन सौंपा गया। विरोध सभा में कॉ. हरकिशोर सिंह ने कहा कि भट्टा पारसौल गाँव में निर्दोष ग्रामीणों पर बर्बर लाठीचार्ज, महिलाओं एवं बुजुर्गों से अभद्र व्यवहार, गाँव को आग लगाना, घायल ग्रामीणों को इलाज के लिए गाँव से बाहर न जाने देना तथा अपनी जायज माँगों को लेकर शान्तिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे निर्दोष किसानों पर गोली चलाना जिसमें तीन किसानों की मौत हो गई सामन्ती युग की बर्बरता की याद दिलाता है। प्रदेश की हालत को देखकर लगता है कि प्रदेश में लोकतंत्र नाम की कोई चीज ही नहीं रह गई है। हर तरफ फासीवाद का खतरा मंडरा रहा है। सरकार लोगों की माँगों पर विचार करने की बजाय अपनी जायज माँगों को मनवाने के लिए शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर लाठी–गोली चलवा रही है। सत्ता के नशे में चूर सरकार को जनता की ताकत का कोई अहसास नहीं रह गया है। आज प्रदेश सरकार ग्रामीणों की उपजाऊ जमीनों को जबरन अधिग्रहण करके कोड़ियों के भाव पूंजीपतियों को दे रही है। उसे किसानों की रोजी–रोटी खत्म हो जाने की कोई परवाह नहीं है। मौहम्मद गौरी, कॉ. इस्लाम अली, बब्बू भाई, विनोद मित्र, विनोद विकल आदि ने भी सभा को सम्बोधित किया। प्रदर्शन में नवाब अली, इरशाद, प्रमोद कंसल, माया देवी, रामेश्वरी देवी आदि अनेक लोग मौजूद थे। ज्ञापन में माँग की गई कि भट्टा पारसौल गाँव में पुलिस तांडव की न्यायिक जांच कराई जाये तथा दोषियों के खिलाफ कठोर कार्यवाही की जाये। मृतकों के परिवारों को 50–50 लाख रुपये और घायलों को दो–दो लाख रुपये मुआवजा तुरन्त दिया जाये तथा घायलों का इलाज स्वयं सरकार अपने खर्चे पर कराये। किसानों पर बनाये गये फर्जी मुकदमें तुरन्त वापिस लिये जायें। पूंजीपतियों के लिए किसानों की जमीन का अधिग्रहण तुरन्त बन्द किया जाये।

राँची में विशाल जनसभा

2 मई को अतिक्रमण हटाओ अभियान के खिलाफ बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के तत्वावधान में एक विशाल जनसभा का आयोजन राँची स्थित शहीद मैदान में किया गया। पूरे झारखण्ड राज्य में जिस तरह से अतिक्रमण हटाओ अभियान के नाम पर गरीब लोगों के घरों को तोड़ा जा रहा है, इससे राज्य की जनता में भारी आक्रोश है। पूरे राज्य भर में बस्ती बचाओ संघर्ष समिति के बैनर तले जबरदस्त आन्दोलन चल रहा है।

14 अप्रैल को राँची में 50000 की तादाद में एक विशाल शान्ति मार्च निकाला गया। इसके पश्चात् 23 अप्रैल को एचईसी क्षेत्र के लगभग 20000 लोगों ने एचईसी को घेरकर उत्पादन ठप करवा दिया। जिस प्रकार धनबाद में अतिक्रमण हटाओ अभियान के खिलाफ आन्दोलनकारियों पर बर्बतापूर्ण तरीके से लाठियाँ एवं गोलियाँ चलाई गई यह जनतंत्र की हत्या है एवं राज्य सरकार की जनविरोधी नीतियों की ओर संकेत करती है। पुलिस द्वारा ए.के. 47 जैसे हथियार इस्तेमाल किये गये व 1 हजार चक्र गोलियाँ चलाई गई। इस गोली कांड में 7 लोगों की मृत्यु हुई तथा 27 से अधिक गंभीर रूप से घायल हुए। राँची के इस्लाम नगर में भी पुलिस द्वारा दो आन्दोलनकारियों पर गोली चलाकर हत्या कर दी गई। हमारी पार्टी की पहल पर जगन्नाथपुर चौक, पटेल चौक तथा पटेल मैदान में आन्दोलन के शहीदों को श्रद्धांजली दी गयी। 2 मई की जनसभा में आने से पूर्व मेधा पाटकर ने हमारे कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर इस्लाम नगर का दौरा कर वहाँ पुलिस –प्रशासन की उपस्थिति में ही पुन: घरों के निर्माण के लिए शिलान्यास किया। एक दिन पहले समिति की ओर से मेधा पाटकर, कॉ. सिद्धेश्वर सिंह व कॉ. केया डे ने मुख्यमंत्री अर्जुन मुण्डा से मुलाकात कर एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें मुख्यत: अतिक्रमण हटाओ अभियान तुरंत रोकने व एचईसी क्षेत्र के बाशिदों को मालिकाना हक देने की मांग की गयी। मुख्यमंत्री ने इस मामले में विचार करने का आश्वासन दिया।

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली–5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी–70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली–35 से मुद्रित, दूरभाष: 011–25726631, E-mail: sarvaharadrishtikon@yahoo.com